समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट का 15वाँ पुष्प

चिन्तन प्रवाह...

लेखक

ब्र. पं. श्रेणिक जैन, जबलपुर

प्रकाशक

समर्पण

18, आदिनाथ कॉलोनी, केशवनगर, उदयपुर (राज.)

मो. 91 9414103492

प्रस्तुत प्रकाशन में सहयोग

5100/- श्री अमित जैन डीटीडीसी दिल्ली, एषणा-आशीष पाटनी वाशिम, श्रीमती विशाखा जैन ध.प. श्री विनय जैन उदयपुर।

3100/- श्री कमल बोहरा, कोटा

2500/- श्रीमती लता-विपिन गाला, मुम्बई

2100/- श्रीमती सुनीता-महेश जैन अहमदाबाद, श्री नेमीचन्द चंपालाल भोरावत चैरीटेबल ट्रस्ट उदयपुर, श्री उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई

2000/- विद्या-सागर जैन उदयपुर, श्री अनिल जैन कोरवा, निधि जैन सागर, श्री हितेश पारिख

1100/- श्रीमती अर्चना-अजय मारवड़कर नागपुर, श्रीमती सरोज भरत नखाते नागपुर, श्री अरुण जैन चैन्नई, श्री महावीर जालमचंद जैन मुम्बई

1008/- श्री सतीश जैन अकलतरा

1000/- श्री दीपचन्द गांधी उदयपुर, श्री सुरेश अखावत उदयपुर, श्री निखिल जैन येवला, श्री मुकेश जैन उदयपुर, श्रीमती शकुन्तलाबेन मीठालाल शाह मुम्बई, श्री महेन्द्रभाई बोरीबली मुम्बई

500/- श्री अमित जैन 'अरिहन्त' मड़ावरा, सुश्री वर्षा जैन कुम्हेर, प्रद्युम्नकुमार अभिषेक जैन मेरठ।

कुल राशि प्राप्त हुई - 48108 रुपये।

प्रस्तुत प्रकाशन हेतु - 40000। अन्य प्रकाशन हेतु शेष - 8108 रुपये।

प्रथम संस्करण : 2000 प्रतियाँ (31 जुलाई 2016, जयपुर में आयोजित 39वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर)

प्राप्ति स्थान : **शाश्वतधाम, उदयपुर (राज.),**
मो. 91-9414103492
: **श्री अमित जैन डीटीडीसी, दिल्ली**
मो. 91-9811393356
: **श्री दिनेश शास्त्री, जयपुर**
मो. 91-9928517346

साहित्य प्रकाशन हेतु सहयोग राशि : 20/-

मुद्रक : देशना (दिनेश) कम्प्यूटर्स
मालवीया इण्डस्ट्रियल एरिया, जयपुर,
मो. 9928517346

प्रकाशकीय...

'समर्पण' का नये लेखकों के विचारों को आप सब तक पहुँचाना ही उद्देश्य है। अभी तक हमारे द्वारा 14 पुष्प प्रकाशित किये जा चुके हैं, जिन्हें पाठकों ने हृदय से सराहा है। यह प्रसन्नता का विषय है कि हमें पुस्तक प्रकाशन के पूर्व ही अर्थ सहयोग प्राप्त हो जाता है। अत: बाद में हम 'जो चाहो ले जाओ, जो चाहो दे जाओ' की भावना से पाठक को साहित्य उपलब्ध कराते हैं, इसमें जो राशि आती है, उसे अन्य प्रकाशन में आवश्यकतानुसार उपयोग करते हैं।

'समर्पण' का प्रस्तुत प्रकाशन ब्र. श्रेणिकजी जैन, जबलपुर द्वारा लिखित **चिन्तन प्रवाह** है। ब्र. श्रेणिकजी द्वारा प्रतिदिन वाट्सअप पर द्रव्यानुयोग की मुख्यता से 10 बिन्दु प्रेषित किये जा रहे हैं, जिन्हें पाठकों द्वारा सराहा जा रहा है। अध्यात्म, नीति, सदाचार, प्रेरणा आदि विविध विषयों से संबंधित बिन्दुओं को स्थायित्व देने के लिए पुस्तकाकार प्रकाशन किया जा रहा है। सभी बिन्दु विषयवार प्रस्तुत न करके मोतियों की भांति बिखरे हुए हैं, पाठक स्वरुचि से अध्ययन कर आनन्द लें - यही भावना है।

भाई पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने व्यस्त रहते हुए भी पुस्तक को पढ़कर अशुद्धि संशोधन कर व्यवस्थित किया है, अत: वे धन्यवाद के पात्र हैं।

पाठकों ने स्वेच्छा से प्रकाशन हेतु अर्थ सहयोग प्रदान किया है, तदर्थ हार्दिक धन्यवाद। उनके नाम अन्यत्र प्रकाशित किये जा रहे हैं।

पुस्तक के सुन्दर मुद्रण के लिए श्री दिनेश शास्त्री (देशना कम्प्यूटर्स) जयपुर का भी आभार।

'चिन्तन प्रवाह' का आनन्द लेकर आप अपने विचारों से लेखक को अवश्य अवगत करायें। धन्यवाद।

निवेदक

समर्पण परिवार (मो. 9414103492)

लेखक की ओर से...

आज के इस व्यस्त और आपाधापी भरे जीवन में किसी के पास स्वाध्याय को समय नहीं और स्वाध्याय बिना आत्मा से परमात्मा बनने की विधि और सुखी रहने की कला का पता पड़ पाना असंभव है। अत: यूँ ही ऐसा विचार आया कि क्यों न कुछ ऐसा किया जाये कि व्यक्ति को कम समय में उसकी सुविधा के अनुकूल ही स्वाध्याय उसके पास उसके घर तक पहुँचा दें तो ये व्हाट्सअप, फेसबुक, Hike एक अच्छा साधन मिल गया क्योंकि कोई कितना ही व्यस्त क्यों न रहे, पर इन्हें अवश्य चैक करता रहता है, इसलिए ये चिंतन का प्रवाह 10 बिन्दुओं के माध्यम से आप तक पहुँचने लगा।

यद्यपि ये सब वाक्य हमारे भगवान के केवलज्ञान से निकली हमारी जिनवाणी माता के ही हैं, बस मात्र उनसे हमारा चिंतन और अनुराग निमित्त बन रहा है।

आप सब भव्य जीवों के भाग्य से अपने आप ही रोज रात सोने के पहले ऐसे भाव आते हैं और ये सब लिखना सहज हो जाता है, इसमें मेरा किंचित् भी कर्तृत्व नहीं।

बीच-बीच में आने वाले साधर्मियों के साधुवाद और अहो भावों से भरे हुए फोन और संदेश मुझे अधिक प्रेरित करते हैं, सो आप सबको साधुवाद।

मैंने तो मात्र फोन पर ही इन संदेशों को भेजा था, परन्तु इसको पुस्तकाकार रूप देने का भाव समर्पण संस्था को आया, अत: वह बारम्बार धन्यवाद की पात्र है और इसमें हर प्रकार का सहयोग देने वाले साधर्मियों को बहुत-बहुत धन्यवाद।

- ब्र. पं. श्रेणिक जैन, जबलपुर
मोबा. 7805022077

समर्पण चेरिटेबल ट्रस्ट

एक परिचय

देव-धर्म-गुरु के चरणों में तन-मन-धन सब अर्पण।
आतमहित व तत्त्वज्ञान को, है सर्वस्व समर्पण।।

ट्रस्ट का नाम - समर्पण चेरिटेबल ट्रस्ट
स्थापना तिथि - 20 सितम्बर 2014

ट्रस्ट मण्डल -

संरक्षक - 1. श्री अजित जैन बड़ौदा, 2. श्री कन्हैयालाल दलावत, 3. श्री ताराचन्द जैन उदयपुर, 4. श्री प्रकाशचन्द छाबड़ा सूरत, 5. श्री ललितकुमार किकावत लूणदा, 6. श्रीमती स्वाति जैन उदयपुर।

अध्यक्ष - राजकुमार शास्त्री उदयपुर, **उपाध्यक्ष** - अजितकुमार शास्त्री अलवर, **कोषाध्यक्ष** - रमेशचन्द वालावत उदयपुर, **मंत्री** - डॉ. ममता जैन उदयपुर, **सहमंत्री** - पीयूष शास्त्री जयपुर, **ट्रस्टी** - पण्डित अशोकुमार लुहाड़िया तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ़, ऋषभकुमार शास्त्री छिन्दवाड़ा, डॉ. महेश जैन भोपाल, रतनचन्द शास्त्री कोटा।

ट्रस्ट की सामान्य रूपरेखा

उद्देश्य - 1. तत्त्वज्ञान, अहिंसा, शाकाहार, सदाचार का प्रचार करना। 2. सामाजिक विकृतियों के विरुद्ध जागरुकता पैदा करना। 3. अनुपलब्ध, आवश्यक व नये लेखकों का श्रेष्ठ साहित्य प्रकाशित करना। 4. सर्वोपयोगी पत्रिका प्रकाशित करना। 5. चिकित्सा व शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त सहयोग को वितरित करना।

कार्य पद्धति - **1. सबसे सहयोग-सबको सहयोग** की भावना से साधर्मियों से प्राप्त सहयोग साहित्य/चिकित्सा/शिक्षा पर आवश्यकतानुसार वितरित करना। हमारा प्रयास होगा कि फण्ड बनाने की अपेक्षा प्रतिवर्ष

प्राप्त सहयोग को उसी वर्ष वितरित कर दिया जाये। 2. व्यक्ति या संस्था के नाम के लिए नहीं, पर काम के लिए काम। 3. सर्वोपयोगी (अपनी समझ के अनुसार) योजना को सबके समक्ष रखना, यदि सहयोग प्राप्त हुआ हो तो उस योजना/कार्य को करना, नहीं तो..... ? 3. अच्छी बातें-सच्ची बातें (अर्थात् शाश्वत सत्य) ज्यादातर लोगों तक पहुँचे, ऐसा प्रयास करना।

गतिविधि - 1. साहित्य प्रकाशन, 2. **संस्कार सुधा** मासिक पत्रिका का प्रकाशन, 3. **स्नातकों द्वारा स्नातकों के लिए शिक्षा चिकित्सा सहायता योजना,** 4. साधर्मी वात्सल्य योजना - साधर्मियों से स्वैच्छिक सहयोग लेकर योग्य साधर्मियों को शिक्षा/चिकित्सा सहयोग पहुँचाना।

निवेदन - यह छोटी संस्था आपके सहयोग से समाज में कुछ कार्य करना चाहती है, यदि आप हमारे विचारों से सहमत हों, तो आप भी आर्थिक सहयोग प्रदान कर या अपनी सहमति देकर हमारा उत्साहवर्धन कर सकते हैं। यदि कोई भाई हमें अर्थ सहयोग न देकर, सीधे ही इच्छुक को देना चाहें तो भी हमें अपनी सहमति दे सकते हैं; आवश्यकतानुसार हम इच्छुक को आपसे संपर्क करने हेतु भी सूचित कर सकते हैं।

हमारा उद्देश्य कुछ अलग ढंग से समाज में जागरूकता लाना व सहयोग करना है। आपके सुझाव व सहयोग सदैव अपेक्षित हैं। आप जब, जो, जैसे कर सकते हैं, आत्महित व समाजहित में जरूर कीजिए। बस यही अनुरोध है।

- निवेदक -

समस्त ट्रस्ट मण्डल, समर्पण चेरिटेबल ट्रस्ट,
उदयपुर (राजस्थान)

ॐ

चिन्तन प्रवाह...

1. इच्छा के निरोध का नाम है, दीक्षा।
2. इच्छा के निरोध की विधि सीखने का नाम है, शिक्षा।
3. मुक्ति का सबसे अनिवार्य सोपान, तत्त्वविचार।
4. अनुशासन रहित जीवन, निन्दनीय है।
5. विचारवान जीव, प्रतिकूलता से नहीं घबराते।
6. आपके विचार ही आपके भविष्य का परिचय देते हैं।
7. सुविधा - जो मोक्षमार्ग को सुलभ कर दे।
8. दुविधा - अंदर में चलने वाला द्वन्द्व, जो हमें दुखी कर दे।
9. तत्त्व विचार-यथार्थता का परिचय कराने वाला प्रथम मित्र।
10. भोग - जो जीव को सुख के नाम पर तड़पा-तड़पा कर मारें।
11. निद्रा एक दोष है, सुख नहीं।
12. सुख साधनों से नहीं, साधना से आता है।
13. सफलता धनी बनने में नहीं, मुनि बनने में है।
14. सुख के लिए सामग्री वे जोड़ते हैं, जिन्हें सुख की खबर ही नहीं होती।
15. सुख के लिए दुनियाँ नहीं, अपनी श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र सुधारो।

16. गड़बड़ी दुनियाँ में नहीं, आपकी सोच में है।
17. विफलता, नई सफलता का शिलान्यास है।
18. जो हार से कभी नहीं हारते, वे ही सचमुच हार को मारते हैं।
19. जीतने वालों के पास, सबसे अच्छी चीज जो होती है, वह है अच्छी सोच।
20. दुनियाँ की ओर देखोगे, तो दुनियाँ में ही दिखोगे ?
21. जिसको दिखता हुआ आत्मा भी दिखाई न दे, वो तो अंधा है।
22. दूसरे का बुरा सोचने से दूसरे का नहीं, अपना ही बुरा होता है।
23. परेशानी दूर करने का सबसे सरल उपाय, अज्ञान दूर करो।
24. आपको आपसे आपका अज्ञान ही दूर करता है।
25. दुखी रहना, विराधना की निशानी है।
26. कषाय, साधर्मी से दूर करती है।
27. जीव तत्त्व को पापतत्त्व से भिन्न देखो, फिर बताओ जगत में कितने पापी हैं।
28. जीव ही जिनवर है, ऐसा महान देखने वाला प्रभुवर है।
29. शुद्धात्मा की कीमत करो, अपने आप कीमती हो जाओगे।
30. जड़ की अधिकता का नाम है धन, और जिसकी जड़ बुद्धि है, उसका नाम है धनिक।

31. अज्ञानी का पुण्य, मिथ्यात्व बाँधने के काम आता है।
32. पर में सुख खोजना, स्वयं को धोका देना है।
33. प्रभावना का पहला सोपान, सकारात्मक सोच है।
34. जिसके दर्शन से पर्याय भगवान बन जाये, उसे कहते हैं भगवान् आत्मा।
35. आपसी बातचीत, बहुतसी समस्याओं का अच्छा समाधान है।
36. वात्सल्य बांटोगे तो वात्सल्य ही मिलेगा, नफरत नहीं।
37. बुराई करनी ही है तो दूसरे की नहीं, अपने ही दोषों की करो ?
38. प्रशंसनीय व्यक्ति को, सब प्रशंसनीय ही दिखते हैं।
39. आत्मभ्रान्ति दूर हुए बिना, सुख की कल्पना भी नहीं की जा सकती।
40. ओवर कॉन्फिडेन्स, हारने वाले का पहला लक्षण है।
41. साधर्मी को हाथ नहीं, आपका साथ चाहिए।
42. निर्णय जुनून से नहीं, सुकून से लिए जाते हैं।
43. अविवेकी जीवन, जीती जागती अप्रभावना है।
44. संस्कार बिगड़ें, तो संस्कृति तो बिगड़नी ही है।
45. बुरे कार्य को बुरा न मानना, उसकी अनुमोदना है।
46. अच्छा चाहते हो तो अच्छा करो।

47. उदय का फल आपकी डिमांड पर आता है, कोई जबरदस्ती नहीं दे जाता।
48. जहाँ नहीं होते संस्कार, वहाँ बढ़ता है अहंकार।
49. अपेक्षा का जहर इच्छाओं की पूर्ति से घटता नहीं, बल्कि और अधिक बढ़ता है।
50. जो मोक्षमार्ग में खड़े होते हैं, वे ही बड़े होते हैं।
51. साथ-साथ की सोचोगे, तो सीधे निगोद में पहुँचोगे।
52. सफलता, संघर्ष का पीछा करती है।
53. संस्कार बिना के बच्चे, भविष्य के अपराधी हैं।
54. नैतिकता, जेल से बचने का सबसे सरल उपाय है।
55. यदि विनय नहीं है, तो आपके पास कुछ नहीं है।
56. संस्कारित बालक भविष्य के महापुरुष हैं, भगवान् हैं।
57. संस्कार विहीन परिवार अर्थात् दुखियों की फौज।
58. बच्चे की प्रथम गुरु माँ है और पाठशाला घर।
59. जो जीवन के लक्ष्य को बदल दे, उसे कहते हैं संस्कार।
60. प्रभावना के लिए धन नहीं, पवित्रता चाहिए।
61. संस्कार - जो सुविधाओं के अभाव में भी दु:खी न होने दे।
62. संस्कार बिना के जीवन को धिक्कार है।
63. अक्सर अपने को सुपर मानने वाले ही डफर होते हैं।

64. अहंकार, अपने को निन्दनीय बनाने का सबसे सरल उपाय है।
65. होते हुए कार्य के करता हो या नहीं होते हुए के ?
66. अन्याय, अनीति के धन से प्रभावना नहीं होती।
67. जोड़ो जितने निमित्त जोड़ने हैं, वे दु:ख ही देंगे।
68. दुर्लभ ! भोग वैभव नहीं, संयम साधना है।
69. जो साधनों की ओर देखते हैं, वे साधना रोकते हैं।
70. कमाओ, कमाना ही है तो ज्ञानधन कमाओ।
71. बेईमानी से पैसा नहीं, पाप कमाया जाता है।
72. सुखी होना है तो धन नहीं बढ़ाओ, तृष्णा घटाओ।
73. लोक में व्यक्ति की नहीं, पुण्य की चलती है।
74. मुमुक्षु – जिसका जीवन, मात्र आत्मार्थ साधने में लगा है।
75. दु:ख भी बाहर नहीं है, मात्र आपकी मिथ्या कल्पना में है।
76. नैतिकता तो, मुमुक्षु का बाहरी शृंगार है।
77. आपने अपने को दुखी माना अर्थात् अपने को जीव नहीं आस्रव तत्त्व माना।
78. जिन्हें बंध तत्त्व की प्रतीति है, वे कभी शिकायत नहीं करते।
79. सुख कोई कल्पना नहीं है, ये तो आत्मा का अपना एक गुण है।

80. कभी भी किसी भी प्रसंग में, नेगेटिव मत सोचो ? बहुत पुण्य क्षीण होगा।

81. इच्छा की पूर्ति अर्थात् भिक्षा की तैयारी।

82. एक ही गलती को बार-बार दोहराने का नाम - मोह।

83. मोही की समस्या भी काल्पनिक है और समाधान भी काल्पनिक है।

84. जगत के सुख-दु:ख में सुख की कल्पना मात्र है।

85. दरिद्रता धन की कमी का नाम नहीं है, बल्कि (कषाय) मोह की अधिकता का नाम है।

86. कषाय की तीव्रता पाप का उदय है और मंदता पुण्य का उदय है।

87. जो अपने को आत्मा मानता है, वो ज्ञानी और जो अपने को आत्मा नहीं मानता, वो अज्ञानी है।

88. मुमुक्षु - जिसका एक समय भी, बिना ज्ञानाभ्यास के नहीं जाता।

89. ज्ञानाभ्यास अर्थात् जिनवाणी से सुनी हुई बात को, बारम्बार दोहराना।

90. असैनी - जो कान होने पर भी जिनवाणी नहीं सुनता।

91. जिनवाणी सुनकर निर्णय नहीं करना, जिनवाणी की सुनी-अनसुनी करना है।

92. जिनवाणी अर्थात् भवसागर से तारने वाली नौका।

93. सज्जन लोग कर्त्तव्य की सोचते हैं और दुर्जन अधिकार की।

94. अपने आत्मा के अलावा, किसी को भी अपना मानना अनंत चोरी है।

95. दुनियाँ का सबसे बड़ा धन, संतोष है।

96. प्रवृत्ति से अनंत गुना अधिक फल, अभिप्राय का लगता है।

97. मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान, श्रद्धा का सुधार है।

98. निर्ग्रंथता अर्थात् निर्भारता।

99. समता अर्थात् आनन्द।

100. ममता अर्थात् दुःख।

101. पर्याय का अपनापन अर्थात् आत्मघात।

102. शरीर अर्थात् जेल तो जेल को सजाने की नहीं, जेल से निकलने की सोचो।

103. भोग अर्थात् रोग, न कि सुख।

104. निष्पक्ष हुए बिना, निर्णय असंभव है।

105. जागने वाले ही, जगाने में निमित्त होते हैं।

106. विषय का सुख, मुक्ति का सुख खोजने भी नहीं देता।

107. व्यर्थ की जिद से, पुण्य क्षीण होता है।

108. जीव विषयों को नहीं, अपनी आसक्ति को भोगता है।

109. जिन्हें है आत्मा की पहिचान, मुक्ति पाना है उनको आसान।

110. संसारी किसी के लिए नहीं, अपनी वासना की पूर्ति के लिए जी रहा है।

111. ज्ञानी है तो मोही नाहीं और मोह है तो ज्ञानी नहीं।

112. क्रोध से काम बनता नहीं है, बल्कि भव बढ़ता है।

113. मोह अर्थात् की हुई गलती को बारम्बार दोहराना।

114. आत्मविश्वास की कमी, खेलने से पहले ही हरा देती है।

115. शंका बाहर से आती है और समाधान अंदर से।

116. दु:ख आता है पर लक्ष्य से और सुख आता है, स्वलक्ष्य से।

117. परिणमता हुआ राग, जीव नहीं आस्रव तत्त्व है।

118. हम दुखी नहीं, दु:ख के भी ज्ञाता हैं।

119. जो रहता है ज्ञाता, उसके घर में आती है साता।

120. जिसे संसार नहीं सुहाता, वो है सच्चा ज्ञाता।

121. जहाँ-जहाँ ज्ञान है, वहाँ-वहाँ आनंद है।

122. यदि आपमें नैतिकता नहीं है, तो धर्म तो दूर, धर्म की पात्रता भी नहीं है।

123. धर्म जवानी से होता है क्योंकि सूक्ष्म आत्मा को समझने के लिए, ज्ञान भी सजग और सूक्ष्म चाहिए।

124. अधिकार से अधिक की अपेक्षा रखना चोरी है।

125. अपराध की अनदेखी, उसकी अनुमोदना है।

126. चाहे कितना ही जोर लगा ले, परन्तु पुण्य से एक फूटी कोंडी भी अधिक किसी को नहीं मिलती।

127. दु:ख का घर, पराधीनता।

128.जगत का सुख कल्पना है, आत्मिक सुख अपना है।

129. अनंत दु:ख का मूल, पर से सुख की बुद्धि अर्थात् श्रद्धा है।

130. पर्याय हमारे अनुसार नहीं, योग्यता के अनुसार परिणमती है, अत: सदा निर्भार है।

131. अज्ञानी की व्यस्तता, विकल्पों की उठापठक मात्र है।

132. जब सब पर्याय क्रमबद्ध हैं तो आपने क्या किया मात्र कर्तृत्व का भ्रम, बस।

133. जिन्हें दया नहीं आती, वे दया के पात्र बनने वाले हैं।

134. भोगों से भी अधिक बुरा, भोगों में आसक्ति है।

135. भोगों की पूर्ति अर्थात् रोगों को आमंत्रण।

136. भोग बाद में छूटते हैं, पहले उनमें से सुख बुद्धि छूटती है।

137. जिनके सप्त व्यसन नहीं छूटे, उनका धर्म छूटा ही जानना।

138. विपरीत विचार उत्पन्न होना ही, अभक्ष्य भक्षण है।

139. बुरा सोचने से बुरा होता है, पर किसी और का नहीं, स्वयं का ही।

140. जो पर की ओर झांका, मोह ने डाला उस पर डांका।

141. एक समय भी विकथा में बर्बाद करना अर्थात् चक्रवर्तित्व हारना, इतनी कीमती है ये मनुष्य पर्याय।

142. आत्मा के बाहर सुख खोजना तो मृगतृष्णा जैसा भटकना और दुखी होना है।

143. छोटी सोच, कभी सफल नहीं होने देती है।

144. पुण्य का दुरुपयोग, पुण्य क्षीण कर देता है।

145. जैसा भवितव्य हो, वैसे ही निमित्त और संयोग मिल जाते हैं।

146. पैसे की नहीं, परिणामों की सम्हाल करो।

147. विशुद्धि धन है और संक्लेशता निर्धनता।

148. दुनिया पुण्य का साथ देती है और पाप का विरोध करती है, आपका नहीं।

149. दुनिया में पुण्य की कीमत है और मोक्षमार्ग में पवित्रता की।

150. जिनके लक्ष्य ऊँचे होते हैं, वे छोटी बातें नहीं सोचते।

151. सब दु:खों का मूल, शरीर को अपना मानने की भूल।

152. जो अपने को भूला, वो भोगों में फूला।

153. थोड़ा सा धैर्य रखना, बहुत सी मुसीबतों से बचा देता है।

154. पैसे से सुख नहीं आते बल्कि साधना चौपट करने के साधन आते हैं।

155. सुविधा का सुख से कोई संबंध नहीं, ये तो दुविधा पैदा करते हैं।

156. ईमानदारी से न रहना, स्वयं से बेईमानी करना है।

157. सफल लोग, रोज लक्ष्य नहीं बदलते।

158. जितने समय और श्रम से मुक्ति मिल सकती है, उतने में लाख कमाएं, अरे रे ये तो बड़ा घाटा किया।

159. अध्रुव संयोग से ध्रुव सुख की कल्पना, असंभव है।

160. आराधना अनिवार्य है, बाकी सब बेकार है।

161. सबके हित की सोचो, कभी किसी का अहित मत विचारो।

162. दुखी रहना ही तो आत्मविराधना है।

163. विषयों को भोगना अर्थात् नजदीक से जानना और अधिक कुछ नहीं।

164. पाप – वो कार्य, जिससे जीव दु:खी होता है।

165. तुम सपने संजोते रहो, काल थोड़ी ही छूट देगा। वो तो एक क्षण में ले जायेगा।

166. ज्ञान में सब दिखता है, बस ज्ञान ही नहीं दिखता, ये बड़ा आश्चर्य है।

167. जीव पाप का ज्ञाता तो है, पापी नहीं है।

168. पाप करते समय दुनिया हंसती है और फल भोगते समय रोती है।

169. कर्मों को दया नहीं है, अत: थोड़ी सी दया स्वयं पर करो और पापों से डरो।

170. चेतने की उम्र है चेत लो, नहीं तो चतुर्गति परिभ्रमण पक्का है।

171. आज ही निवृत्ति लो क्योंकि ये जीवन भव के अंत के लिए है, भववृद्धि के लिए नहीं।

172. सदा याद रखना, समस्या एक समय की है और समाधान त्रैकालिक।

173. समस्या के नहीं, समाधान का हिस्सा बनिये।

174. दान बिना गृहस्थ का घर, श्मशान तुल्य है।

175. पाप स्वयं को दु:ख का कारण और दूसरे को दु:ख का निमित्त है।

176. प्रभावना का मूल, वात्सल्य।

177. कषाय से टूटते हैं और वात्सल्य से जुड़ते हैं।

178. जीवन सस्ता, सादा और संयमित कीजिए। देखना बहुतसी समस्यायें तो आपोआप चली जायेंगी।

179. अपराध किसी और को नहीं, सबसे ज्यादा अपराधी को ही परेशान करता है।

180. जो दूसरों को परेशान करते हैं, वे दूसरों से परेशान होते हैं।

181. बचपन में धर्म के संस्कार हों, जवानी में रत्नत्रय का व्यापार हो, तब कहीं बुढ़ापे में मुक्ति की ओर विहार होता है।

182. विवेक का नाम ही सदाचार है,

183. मर्यादा के उल्लंघन का नाम ही भ्रष्टाचार है।

184. योग्य विनय, भक्ति ही, शिष्टाचार है।

185. छोटी सफलता में संतुष्ट होने वाले, बड़ी सफलता नहीं पा पाते।

186. आचार का मूल, विचार।

187. तत्त्व विचार, मोह से निपटने का एक मात्र उपाय है।

188. शत्रु को नहीं, शत्रुता को मिटाओ।

189. क्षमा मांगने से ज्यादा अच्छा है, अपराध नहीं करना।

190. दुखिया दु:ख में ही निमित्त होता है और सुखिया सुख में, अत: सदा खुश रहो।

191. मित्र – जो गलत बातों में साथ न दे।

192. विपरीत विचार से पाप बंध होता है।

193. पढ़ने का नहीं, पढ़कर अपनाने का नाम है स्वाध्याय।

194. हम सब सुखी होने के नहीं, वासना की पूर्ति के प्रयास में लगे हैं।

195. तिर्यंचगति के जीव, मायाचारी का फल बता रहे हैं और हम हैं कि फिर भी मायाचारी करे जा रहे हैं।

196. गलती होना अपराध है और उसे छिपाना महा अपराध।

197. जीवन को जिनशासन से सजाओ, नहीं तो सजा भुगतने तैयार हो जाओ।

198. दुनिया का हर संसारी जीव भोगों को नहीं, अपने परिणामों को ही भोग रहा है।

199. ये बनने बनाने का नहीं, बने बनाये भगवान आत्मा में समाने का मार्ग है।

200. व्यसन-दु:ख मिलने पर भी, जिसमें सुख दिखता हो, उसे कहते हैं व्यसन।

201. अनित्य विषयों से नित्य सुख की आशा, मूर्खता ही है।

202. जो मोक्षमार्ग, धर्म मार्ग में नहीं लग रहे हैं। वे नर्क निगोद जाने की तैयारी कर रहे हैं।

203. रूखा भोजन अर्थात् अनाशक्ति से किया गया भोजन। जिसमें राग की चिकनाई नहीं है।

204. सम्मान अर्थात् दूसरे की सत्ता को भी सिद्ध समान मानना।

205. भगवान् नहीं भगवान आत्मा को देखना ही, भगवान् की आज्ञा मानना है।

206. यदि आप सरल नहीं हैं, तो कठोर हैं।

207. रुचि के विषय में दोहराव, दोष नहीं गुण है।

208. परावलम्बन से पर नहीं, कष्ट मिलता है।

209. गुरु आज्ञा में जीवन जीने से, बहुत अधिक कषाय गलती है, विशुद्धि फलती है।

210. यदि आप भयभीत हैं तो फिर आप अपराधी हैं, क्योंकि निरपराधी तो निर्भय रहता है।

211. शरीर के रोग से, शरीर में अपनेपन का रोग अनंतगुना बड़ा है।

212. ज्ञान कषाय गलाने मिला है, पोषने नहीं।

213. मंदिर के बाहर चमड़े की वस्तु ही नहीं, चर्म अर्थात् देह की दृष्टि भी छोड़ दीजिए।

214. प्रतिकूलता–परसन्मुखता का नाम ही, प्रतिकूलता है।

215. दुःख पर से नहीं, पर की आशा से आता है।

216. जो सुख के लिए बाहर झांक रहे हैं, वे सब भिखारी हैं।

217. समृद्ध वो हैं, जिसे सुख के लिए एक अणु भी नहीं चाहिए।

218. संयोगों को अनित्य न जानना ही, शोक का कारण है।

219. इच्छा की पूर्ति अर्थात् मोह के आगे हथियार डालना।

220. शरणार्थी नहीं, आत्मार्थी बनकर रहो।

221. जो भी और जितना भी विचार करो, आत्महित के लक्ष्य से करो।

222. स्वच्छंदता मोक्षमार्ग की अपात्रता है, आपकी मुक्ति छीन लेगी।

223. चिन्ता, दु:ख, खीज ये सब आपकी अज्ञानता के सूचक हैं।

224. जीव ज्ञान से महान बनता है और अज्ञान से दीन।

225. परिग्रह से प्रभुता नहीं, परेशानी बढ़ती है।

226. चतुराई - जो संसार में न फंसने दे।

227. जैनी - जिसको भगवान् बनने के अलावा कुछ न सूझता हो।

228. विपरीत विचार को, महा अहितकारी जानना।

229. पराधीनता से कभी सुख नहीं आ सकता, दु:ख ही आता है, ये नियम है।

230. महापुरुष - जो महापुरुषार्थ से, महान आत्मा को अपना कर, महामुक्ति प्रगट करते हैं।

231. स्वयं को दु:खों से बचाना ही, सच्ची दया है।

232. हम सुख वहाँ खोजते हैं, जहाँ हमें सुखबुद्धि होती है।

233. जगत का सुख कल्पना है, जिसके पाने में आकुलता ही मिलती है।

234. ये देखादेखी का नहीं, निर्णय लेकर, सम्यक् प्रतीति पूर्वक अनुभव का मार्ग है।

235. शरीर सजा है गौरव नहीं। यदि इसे और अधिक सजाओगे, तो सजा ही सजा पाओगे।

236. ईर्ष्या की आग में जलने वालों को ही एसीडिटी और बॉडी में जलन से जूझना पड़ता है।

237. ईमानदारी बिना, सुकून की कल्पना असंभव है।

238. वर्तमान पर्याय को इतना अधिक मत सजाओ कि अनन्तकाल तक उसकी सजा पाओ।

239. देह में अपनापन, अनंत बार देह दिलाता है।

240. अपनी गलती न स्वीकारना, तीव्र कषाय है।

241. जीवन की सारी समस्याओं को दूर करने का एक मात्र उपाय, अपने को शरीर नहीं, आत्मा मानो।

242. समस्या है मान्यता में और बदलने में लगे हो सारी दुनिया। बड़ा आश्चर्य है ?

243. सुखी होने के लिए सामान नहीं जुटाओ बल्कि आत्मा में अपनेपन के लिए हर तरह से जुट जाओ।

244. बिना आत्मा के, सुख का प्रयास रेत में से तेल निकालने जैसा उल्टा कार्य है।

245. ज्ञानी हित-अहित की सोचता है और अज्ञानी धन और निर्धनता की।

246. ईर्ष्या से अंतराय बंधता है।

247. लोभ से धन नहीं, निर्धनता बढ़ती है।

248. दुःख दूर करना या कषाय दूर करना, एक ही बात है।

249. आत्मा बिना धर्म की चर्चा की जा सकती, धर्म नहीं।

250. जैसे शक्कर और मिठास एक ही चीज हैं, ऐसे ही ज्ञान और आत्मा को जानना ।

251. ध्यान रखना लाभ मतलब सुख होता है और हानि मतलब दु:ख।

252. मानी का सारा बड़प्पन पर से और ज्ञानी का सारा बड़प्पन आत्मा से होता है।

253. जो अपना है वो कभी छूटता नहीं और जो छूट जाता है, वो कभी अपना नहीं।

254. वस्तुस्वरूप को सहज न स्वीकारना, ये तो क्रोध है।

255. ऊँचे दिखने के लिए पर की याद आना, ये तो मान है।

256. पर की इच्छा, अरे ये तो लोभ है।

257. परिग्रह से बड़ा मानना, ये तो निर्धनता है।

258. धन होने पर भी और अधिक की भूख, ये तो बड़े दरिद्री की निशानी है।

259. शोधे बिना किया गया भोजन, अभक्ष्य है।

260. इच्छा जीव को भिखारी बना देती है।

261. जो जीव मुक्ति से कम की सोच रहे हैं, वे घूम-फिर कर निगोद जाने की तैयारी कर रहे हैं।

262. दुनिया का सबसे सरल कार्य है, भगवान बनना।

263. जो एक भी कार्य को अपने अनुसार नहीं परिणमाना चाहे, उसे कहते हैं ज्ञाता।

264. जिसे आत्मा के सिवा कुछ और नहीं भाता, उसका नाम है ज्ञाता।

265. जो स्वयं ही तृप्त है और स्वयं में तृप्त है, उनका नाम है ज्ञानी।

266. हंसना सुख नहीं, कषाय अर्थात् दु:ख है।

267. सुख का नाप, निराकुलता से होता है धन से नहीं ?

268. परिग्रह से प्रभुता नहीं, तृष्णा बढ़ती है।

269. जीव जोड़ने से नहीं, छोड़ने से महान बनता है।

270. जीव सिर्फ अपने परिणामों के अलावा, किसी भी चीज का आहार नहीं करता, नहीं कर सकता।

271. जीव के पास भगवान् बनने की शक्ति तो है, पर एक तिनके को खिसकाने की भी नहीं।

272. दोष ग्रहण करने से दोष बढ़ेंगे और गुण ग्रहण करने से गुण।

273. विकारी परिणाम हमारे शत्रु हैं और विशुद्ध परिणाम मित्र।

274. जो हमारे पास नहीं है, वो चाहिए भी नहीं और जो चाहिए है वो तो सदा हमारे पास ही है।

275. दोष स्वीकारने में जितनी देर करोगे, मुक्ति उतनी ही देर से होगी।

276. जो भी कार्य करो, समझ कर करो। नासमझी से तो हर कार्य बिगड़ता ही है।

277. भोगों की आसक्ति से, जीव की शक्ति, समय और संयम का निरंतर घात होता है।

278. मोह अर्थात् पर में सुखबुद्धि। जो जीव को निरंतर दुखी करती ही रहती है।

279. मुमुक्षु जो हर हाल में प्रसन्न अर्थात् सुखी रहे।

280. मानी को जगत से सम्मान नहीं, बल्कि धिक्कार मिलता है।

281. अभयदान का मूल, हृदय में करुणा का होना।

282. ज्ञान दान की पहली पात्रता, स्वयं ज्ञानी बनो।

283. गुरु की उपेक्षा, कभी गुरु नहीं बनने देती।

284. गुरु को निश्चिन्त रखना ही, गुरु की सेवा है।

285. दोष ग्रहण करना तीव्र कषाय है और गुण ग्रहण करना मंद।

286. तीव्रकषायी, विचार नहीं करता।

287. जिनवाणी के विपरीत सोचना, तीव्र कषाय है।

288. सप्त व्यसन से भी बड़ा पाप है, पर में सुखबुद्धि का होना।

289. दुखी होना, विचार शून्यता का परिचायक है।

290. दान गृहस्थी के पापों से बचने का सबसे सरल साधन है।

291. जो सरल हैं, उनके लिए सब सरल हैं और जो कठोर हैं, उनके लिए सब कठोर।

292. अधिक मेहनत से धन कमाना तो आपके पाप के उदय को दर्शाता है, क्योंकि पुण्यशाली को तो सब कुछ बिना किये ही मिलता है।

293. हमारा वैभव धन नहीं, रत्नत्रय, संयम और विशुद्धि है।

294. प्राप्त पर्याय की तन्मयता, आत्मा के बारे में सोचने तक नहीं देती।

295. जगत में आपकी नहीं, पुण्य की ही पूजा होती है, वो हमें अपनी लगती है, यही मिथ्यात्व है।

296. लोगों की नहीं, अपनी नजरों में अच्छा बनने से मुक्ति मिलती है।

297. अपने को परमात्मा नहीं मानना पाप है और यही पाप सारे पापों का मूल है।

298. ज्ञान दान के सबसे प्रथम पात्र हम स्वयं हैं, अत: सबसे पहले स्वयं को समझाइये।

299. यदि आप अपने आत्मकल्याण में नहीं लगे हैं तो आप अपने साथ ही अन्याय कर रहे हैं।

300. समय का बहाना वे बनाते हैं, जिन्हें कुछ करना नहीं है।

301. जो जिनवाणी सुनकर अनसुनी कर रहे हैं, वे अगली पर्याय में बहरे (असैनी) होंगे।

302. होने की धुन में, हूँ रह जाता है ये भी मिथ्यात्व (महा-पाप) है।

303. हम परिपूर्ण होकर भी अपूर्णता का वेदन कर रहे हैं, ये महा आश्चर्य है।

304. अपने हाथ से अपने घर को, जलाने वाली आग का नाम है ईर्ष्या।

305. जिसको जहाँ अपना हित दिखता है, उसका वहीं सर्वस्व समर्पण होता है।

306. मोह, जो कुछ सोचने न दे।

307. सुखी रहना जीवन है, दु:खी रहना मौत।

308. सुख का नाप सामग्री से नहीं, निराकुलता से किया जाता है।

309. मोही दु:ख की बातें खोजते हैं और ज्ञानी सुख की बातें।

310. ये भोगों में सुख खोजने का नहीं, आत्मा में खो जाने का मार्ग है।

311. दूसरे से अपेक्षा रखने वाले, एक क्षण भी को भी सुखी नहीं रहते।

312. सावधानी, बहुतसी गलतियों से बचा लेती है।

313. मोक्षमार्ग का पुरुषार्थ अर्थात् खूब तत्त्वचिंतन और तत्त्वविचार।

314. स्वयं पर दया अर्थात् वीतरागी हो जाना।

315. जो ज्ञान मोह-राग-द्वेष बढ़ाने में लगा है, उसी को तो अज्ञान कहते हैं।

316. जिसे सुख के लिए पर की याद आती है, उसे सुख का स्वरूप ही नहीं पता?

317. जिसे एक भी कार्य का भार है, वो मुमुक्षु नहीं।

318. जिन्हें अपने ऊपर दया नहीं आती, उन्हें प्रकृति दया का पात्र बना देती है।

319. जिनवाणी सुनने को नहीं सुनी जाती, वो तो निर्णयपूर्वक अनुभव के लिए सुनी जाती है।

320. समृद्धता परिणामों में आती है, संयोगों में नहीं।

321. अज्ञानता आत्म विस्मरण का नाम है, कम जानकारी का नहीं।

322. यदि श्रद्धा नहीं सुधारी तो समझना सब बिगड़ने वाला है।

323. समझदारी दुनिया की बराबरी करने में नहीं, सिद्धों की बराबरी करने में है।

324. छोटी सोच का नाम है, निर्धनता।

325. कर्म आपके परिणामों का फल है, किसी का श्राप नहीं।

326. स्वात्मा को जाने बिना, स्वतंत्रता की कल्पना भी मिथ्या है।

327. जितना अहित हमारे दुर्विचारों ने हमारा किया है, उतना शायद किसी ने नहीं।

328. एक-एक परिणाम का फल आयेगा, उसे भगवान भी नहीं रोक सकते।

329. दुनिया का सबसे बड़ा संतोष धन और सबसे बड़ी निर्धनता तृष्णा है।

330. हमारा सबसे बड़ा मित्र हमारा ज्ञान और शत्रु हमारा अज्ञान है।

331. वस्तु इच्छा से नहीं, पुण्य से मिलती है। इच्छा से तो सिर्फ और सिर्फ कष्ट मिलता है।

332. जीव भोगों को नहीं, उस संबंधी अपने राग को ही भोगता है।

333. पाप - जिस कार्य को करने से दु:ख उत्पन्न हो, उसे पाप कहते हैं।

334. जो जीवतत्त्व विचार नहीं करते, वे तो जड़ (अजीव) हैं।

335. यदि आपको दूसरे की निंदा में आनंद आता है, तो समझ जाओ आप नीच गति में जन्मने वाले हैं।

336. कषाय का उत्पन्न होना ही प्रतिकूलता है।

337. अज्ञानी का भोग मात्र उसकी कल्पना है।

338. यदि आप तत्त्वविचार नहीं कर रहे हैं तो आप नियम से दुर्विचार कर रहे हैं।

339. तीव्र पापानुबंधी पुण्य के उदय में, कोई पापों से रोककर, धर्म में लगाने वाला नहीं मिलता।

340. यदि आपने साधर्मी वात्सल्य नहीं किया तो आपको भी किसी से वात्सल्य नहीं मिलेगा।

341. छोटी सोच, बड़े दरिद्री की निशानी है।

342. धन के लिए अधिक हाथ पैर वे मारते हैं, जिन्हें अपने पुण्य का भरोसा नहीं होता।

343. यदि पुण्य न हो तो, आपकी दया भी किसी की प्रतिकूलता नहीं मिटा सकती।

344. इच्छा का उत्पन्न न होना ही अनुकूलता है।

345. उल्टी सोच अर्थात् मोह को जा रहा है, आपका वोट।

346. जिन्हें बंध नहीं करना हो वे कषाय न करें।

347. जो आत्मा को छोड़, उसके बाहर सुख खोज रहे हैं, वे सब अजैनी हैं।

348. जिनमत में तो एक रागादि मिटाने का ही प्रयोजन है।

349. दूसरे का बुरा चाहने से दूसरे के बुरे होने की गारंटी नहीं, पर अपना बुरे होने की पूरी गारंटी है।

350. तत्त्वज्ञान के अभाव से, ज्ञान को अज्ञान कहते हैं।

351. जीव मेहनत से नहीं, विकल्पों से थकता है।

352. मिथ्यात्व है, सो ही संसार है।

353. सुखी होना, प्रयोजनभूत कार्य है और दुखी होना, अप्रयोजनभूत।

354. हमें कोई और नहीं, हमारी ही गन्दी आदतें औरों से पीछे कर रही हैं।

355. वे लोग निर्धन हैं, जिनके पास धन तो है, पर सुकून नहीं।

356. आलस, जीव को भिखारी बना देता है।

357. जिनके घर पर अधिक नौकर हैं, वे बड़े पराधीन हैं।

358. जिनकी विषयों में बुद्धि है, वे स्वाभाविक दुखी हैं।

359. इच्छा से अलग कोई दु:ख नहीं।

360. मिथ्यात्व के साथ तो सुख बढ़ाने का हर उपाय, दु:ख बढ़ाने में सहायक है।

361. इच्छा की पूर्ति कभी नहीं होती, बल्कि वृद्धि और हो जाती है।

362. पाप को न रोकना, पाप की अनुमोदना करना है।

363. परीक्षा किए बिना, वस्तु का भाव भासित नहीं होता।

364. विषय भोग को, दु:ख का बीज जानना।

365. विषय में सुखबुद्धि मिथ्यादर्शन है और विषय में दु:खबुद्धि सम्यग्दर्शन है।

366. तत्त्वज्ञान के लिए शर्त नहीं, समर्पण चाहिए।

367. दण्ड का कारण, गलती को बार-बार दोहराना।

368. पर संग का आधार, विपरीत विचार।

369. विषय के सुख से भी बड़ा पाप, विषय में सुख बुद्धि है।

370. आपका भविष्य कैसा होगा, ये ज्योतिषी से नहीं, अपने परिणामों से पूछो।

371. परिग्रह अर्थात् दु:ख की सामग्री।

372. आपका वर्तमान, आपके पूर्व परिणामों का प्रतिफल है।

373. आत्मा के लक्ष्य से जो भी किया जाये, वो मोक्षमार्ग और जो भी विरोध में किया जाये, वो संसार मार्ग।

374. यदि हमें अपना हित करना हो तो हेय क्या है और उपादेय क्या है, इतना तो जानना अनिवार्य है।

375. जीव परिग्रह से नहीं, अपने कार्यों से महान बनता है।

376. मरने की चिंता का नाम, मृत्यु है।

377. आत्मा का भोग अर्थात् विकल्प करके दुखी होना।

378. पवित्रता की वृद्धि ही, जीवन का विकास है।

379. शरीराश्रित सोच ही का नाम तो पराश्रित सोच है।

380. उल्टी मान्यता पाप है, सब पापों का बाप है।

381. परमात्मा अर्थात् ओनली प्योर आत्मा।

382. कर्त्तव्य – स्वयं को प्रसन्न रखना, आपका सबसे बड़ा कर्त्तव्य है।

383. अनुत्साह, स्वयं की तरक्की को रोकने का सबसे सरल उपाय।

384. यदि हम श्रेय किसको मिलेगा ये सोचना बंद कर दें ? तो महान कार्य करने लगें।

385. पर्याय बनकर तो अनंत कष्ट उठाये। अब द्रव्य बनकर थोड़ा आनन्द उठा लो।

386. अहंकार असफलता ही लाता है, सफलता नहीं।

387. परिणमन की सारी चिंता दूर करने का उपाय अपने को अपरिणामी देखो।

388. धार्मिक दिखो नहीं, धार्मिक बनो।

389. यदि आप दुखी हो रहे हैं तो समझ जायें आप दुरविचार में उलझे हैं।

390. तत्त्व विचार अमृत है, तो विपरीत विचार जहर।

391. सर्व दु:खों की जड़, दूसरों पर नजर।

392. श्रद्धा, ज्ञान, चारित्र के बाहर न सुख है और न ही दु:ख।

393. अधिक जानने वाला ज्ञानी नहीं है, बल्कि आत्मा को जानने वाला ज्ञानी है।

394. द्वादशांग का ज्ञान और आत्मज्ञान में कोई अन्तर नहीं।

395. किसी की भी कीमत उसके गुणों से होती है, भीड़ से नहीं।

396. मोक्षमार्ग में सब कोई नहीं, कोई भाग्यशाली ही चल पाता है।

397. सुख की खोज के पहले, सुख को पहचान तो लो ?

398. निन्दा करने वाले बड़े उपकारी हैं वे स्वयं तो बंधते हैं और हमारी निर्जरा करते हैं।

399. शिकायत वे करते हैं, जो परिणमन को स्वतंत्र नहीं देख पाते।

400. इस दुनिया में मोह के अलावा, हमें कोई और परेशान ही नहीं करता।

401. राग के अलावा कोई और को दु:ख का कारण मानना, अनंत पाप मिथ्यात्व है।

402. जो भोगों में संतुष्ट है, प्रकृति उनसे रुष्ट है।

403. प्रमाद आपकी अरुचि को दर्शाता है।

404. पुरुषार्थी को कुछ भी कठिन नहीं।

405. डर, अपराधी की पहिचान है।

406. जिसके पास आत्मविश्वास नहीं, वो तो खेलने के पहले ही हार चुका है।

407. सरल कार्य भी, अरुचि होने पर कठिन लगता है।

408. मुक्ति अर्थात् मुक्ति की चिंता का भी न होना।

409. वचनों की कड़वाहट, सम्बन्ध टिकने नहीं देती।

410. कोई भी चीज बनाने में अधिक समय लगता है, बिगाड़ने में नहीं।

411. जो कमियाँ खोजता है, उसकी कमियाँ कभी दूर नहीं होतीं।

412. चिढ़ने से, स्वयं का विकास रुकता है।

413. तत्त्वाभ्यास, सम्यक्त्व की पात्रता है।

414. सारे पाप, निर्विचारता से चल रहे हैं।

415. हर कार्य करने से पहले मोह नहीं, ज्ञान को खड़ा करो और उससे पूछ कर ही हर कार्य करो।

416. पछताने से तो अच्छा है, आज ही आत्मकल्याण में लग जाओ।

417. मोह पाप करने को उकसाता है, बातों में न आ जाना।

418. जितना पढ़ो, उससे 10 गुना अधिक सोचो।

419. सैनी अर्थात् जो निर्विचारी होकर कोई पाप न करें।

420. आत्मा की तरफ से सोचोगे, तब पता चलेगा कि यथार्थ सुख क्या है और यथार्थ दु:ख क्या है।

421. जिन्हें स्वयं पर दया नहीं आती, उनसे ज्यादा दयनीय इस दुनिया में कोई और नहीं।

422. पराधीनता का नाम दरिद्रता है और स्वाधीनता का नाम अमीरी।

423. सम्यग्दर्शन का यथार्थ पुरुषार्थ, तत्त्व विचार है।

424. घूमना-फिरना सुख का कारण नहीं, दु:ख का कारण है।

425. यदि सुखी होना हो तो मोही की हर बात को उल्टा ही मानना।

426. मोही की दुनिया उल्टी है और ज्ञानी की दुनिया सुलटी।

427. लौकिक प्रशंसा असमानजातीय पर्याय की प्रसिद्धि मात्र है, आपकी नहीं।

428. दोष दूर करो, दोषी नहीं।

429. दोष का जाना ही, गुण का प्रगटना कहलाता है।

430. पर्याय के दोष दोष न लगना, महादोष है और निर्दोष स्वभाव में दोष दिखना, अनंतदोष है।

431. शरीर में रहना शोभा नहीं, कलंक है कलंक।

432. असफलता का डर कुछ करने ही नहीं देता।

433. मिथ्यात्व का कारण, विपरीत विचार।

434. दु:ख दूर करने के लिए धन मत जोड़ो, बल्कि कषाय करना छोड़ो।

435. यदि तुम इन कषायरूपी शत्रुओं को नहीं मारोगे, तो ये तुम्हें मार देंगे।

436. दान के प्रथम पात्र हम स्वयं हैं, जितना दे सको, उतना अधिक से अधिक अपने को ज्ञान दान दो।

437. मोही, अन्य को तो छोड़ो, ज्ञान से भी मान पोषता है।

438. गुरु बनना आसान है और गुरु बनाना कठिन।

439. समय गया, मानो चक्रवर्ती की सम्पदा चली गई।

440. इच्छा का मूल, पर में सुख बुद्धि।

441. दुखिया का लक्षण, इच्छा की उत्पत्ति और पूर्ति।

442. समृद्धता, शांतता का पीछा करती है।

443. जिस घर में बुजुर्गों का सम्मान नहीं होता। वहाँ की सुख, शांति और समृद्धता चली जाती है।

444. ज्ञान विनय से आता है और अविनय से तो जो है वो भी चला जाता है।

445. परिश्रम बिना फल की चाह तो चोरी है।

446. जो ज्ञान कषाय न गलाये, वो तो अज्ञान है।

447. विषय से सुख नहीं दु:ख मिलता है। अरे तो क्या सबने दु:ख का ही नाम सुख रख लिया है ? हाँजी।

448. जो किसी की बात नहीं मानते, उन्हें प्रकृति अपने आप सिखा देती है।

449. दोष दूर करना ही दु:ख दूर करना है।

450. निंदा सदा दोषों की होती है, जीव की नहीं, वह तो सदा प्रशंसनीय है।

451. जीव को जिनवर न देखना अपराध है, सबसे बड़ा अपराध।

452. गलत बात को न निषेधना, उसका पोषण करना है।

453. विषयासक्ति से विषय मिलते तो नहीं, बल्कि दूर और हो जाते हैं।

454. जिसे सुख के लिए दूसरे की याद आती है, उसे मिथ्यादृष्टि कहते हैं।

455. जिसे सुख के लिए पर तो छोड़ो एक विकल्प भी उत्पन्न नहीं होता, उसे कहते हैं मुमुक्षु।

456. मुमुक्षु और मायूस – ये तो असंभव है।

457. रफ्तार उनके पास होती है, जिनके पास लक्ष्य होता है।

458. जब विपरीत बात बार-बार दोहराने पर सही लगने लगती है तो सही बात दोहराने पर सही क्यों नहीं लगेगी।

459. जो अपना नहीं है, वह स्वप्न में भी कभी अपना नहीं हो सकता।

460. बड़ों की उपेक्षा, छोटों से उपेक्षा दिलायेगी।

461. सज्जन – जिसे सत अर्थात् अपनी सत्ता की खबर हो कि मैं कौन हूँ वो सज्जन है।

462. भगवान के दर्शन का तो ये ही लाभ है कि हमें आत्मा ही एकमात्र दर्शनीय लगने लगे।

463. विशुद्धि से मोक्षमार्ग चलता है और अशुद्धि से संसार मार्ग।

464. ये अवसर अपनी सुनने का है, जगत की नहीं।

465. दूसरे को खुश रखना असंभव है तो क्यों न अपनी शक्ति स्वयं को खुश रखने में लगा दें।

466. ज्ञायक को काम नहीं, व्यवस्थापक को आराम नहीं।

467. गुरु आज्ञा ही तो आगम है।

468. मोह अर्थात् आत्मा का तिरस्कार।

469. ध्रुव के अलावा सबके लिए, एक बार मर तो जाओ।

470. अपने को आत्मा न मानकर स्त्री-पुरुष मानना, मायाचारी है।

471. जिन्हें आत्मा नहीं सुहाता, वे स्वयं के शत्रु हैं।

472. प्रमाद, आनंद का घातक है।

473. पहले पाप, पाप तो लगे। फिर छूटने की बात होगी।

474. चाहे कर्म काटना हो, तो तत्त्व विचार करो और चाहे रत्नत्रय पाना हो तो तत्त्व विचार करो।

475. विशुद्धता से जीव मोक्षमार्ग में आगे बढ़ता है तो संक्लेशता से संसार मार्ग में बढ़ता है।

476. जिनको बुजुर्गों पर दया नहीं आती, उनका बुढ़ापा बिगड़ने वाला है।

477. जो जीव प्रतिक्रमण नहीं करते, उनके जीवन में पापों के ढेर लगते जाते हैं।

478. भोगों की अरुचि सुलायेगी और आत्मा की रुचि जगायेगी।

479. कुसंग, नरक का द्वार है।

480. जो अपने हित की नहीं सोचते, उनका अहित पक्का है।

481. चाहे परिणाम बिगाड़ो या न बिगाड़ो पुण्य से अधिक कभी किसी को कुछ भी नहीं मिलता।

482. राग की आग को कोई आत्मार्थी ही पहिचान सकता है।

483. तुम्हारे पुण्य-पाप के परिणामों की इस जगत में किसी को किंचित् भी जरूरत नहीं, अकिंचित्कर है।

484. पैसा नहीं, परिणाम बिगड़ने का नाम है घाटा।

485. मरने की चिंता का नाम मरण है क्योंकि जीव तो कभी मरता ही नहीं।

486. परलक्ष्य से और सुख ! कभी आ ही नहीं सकता, असंभव।

487. बच्चों के सुखद भविष्य के लिए धन नहीं, संस्कार दीजिए।

488. अज्ञानी सुखी नहीं होने देता और ज्ञान दुखी नहीं होने देता।

489. जो निमित्त को करता देखे, उसे अज्ञानी कहते हैं।

490. जिद्दी व्यक्ति बहरा होता है, वो किसी की भी नहीं सुनता।

491. जो अपनी ओर चरण नहीं बढ़ाता, वो लंगड़ा है।

492. जो यथार्थ वस्तुस्वरूप की ओर नहीं देखता, वो अंधा है।

493. जिसे विषयों में सुख दिखता है, वह अंधा है।

494. जिसे आत्मा में रस नहीं आता, वो नीरस है।

495. जो असंग से दूर करे, वो कुसंग है।

496. अहंकारी, किसी से कुछ नहीं सीखता।

497. विपरीत विचार, हमें मुक्ति से दूर करते हैं।

498. ज्ञानाभ्यास का फल हर क्षण आता है, पर अज्ञानी हर क्षण उससे वंचित रहता है।

499. आनन्दित न रहना ही तो दु:खी रहना है।

500. सुख – जिसे भोगते हुए, कभी थकान न लगे।

501. सुखी रहना, हमारा प्रयोजनभूत कार्य है और दुखी रहना, अप्रयोजनभूत कार्य।

502. जो अपनी दृष्टि नहीं परिवर्तित करते, उनके पंचपरावर्तन निश्चित है।

503. आत्मा को जानना, अपना मानना और उसमें रम जाना। प्रत्येक जीव को एकमात्र ये ही कर्त्तव्य है।

504. सुख का संबंध आपके परिणामों से है, संयोगों से किंचित् भी नहीं।

505. भोगों की सामग्री सदा और सबको, मात्र दु:ख में ही निमित्त है।

506. जो मात्र खाने, कमाने में लगे हैं, वे तो पशुतुल्य जीवन ही जी रहे हैं।

507. बाहर की आँख उठी तो लुटी और अंदर को आँख उठी, तो भ्रान्ति मिटी।

508. सच्ची करुणा तो वीतरागता का नाम है।

509. जीवन में सफलता का कारण साता वेदनीय है, आपकी बुद्धि नहीं।

510. चाहने से कोई कार्य नहीं होता, मात्र आकुलता के अलावा।

511. वासना अर्थात् विषयों में सुख बुद्धि।

512. साधना अर्थात् बाह्य साधन बिना, प्रसन्न रहना।

513. जिनाज्ञा उल्लंघन, विश्व का सबसे बड़ा अपराध है।

514. दूसरे में कुछ करने की सोचना अर्थात् अपने दुखी होने की तैयारी करना।

515. अपनी मान्यता बदलना, इस विश्व का सबसे बड़ा पुरुषार्थ है।

516. दुखी होना पाप है और स्वाश्रय से सुखी रहना धर्म।

517. सच्चे देव – जो शुद्धात्मा के दर्शन कराये।

518. जिनवाणी – जो वीतरागी होने का रास्ता बताये।

519. गृहस्थ – जो मोक्षमार्ग में चलने को ललचाये।

520. पापी – जो नरक जाने की तैयारी में ही जीवन बिताये।

521. कषायी – जो कषाय करके अपने को और सबको निरन्तर सताये।

522. धर्मात्मा – जो धर्मी आत्मा के आश्रय से आनंदमयी जीवन बिताये।

523. परमात्मा – जो अनंत काल में भी, कभी आत्मा से निकल कर बाहर न आये।

524. शुद्धात्मा – जिसके आश्रय से सारी दुनियाँ आनंदित हो जाये।

525. बहिरात्मा – जो आत्मा के बाहर की वस्तुओं से अपना परिचय बतलाये।

526. जिनमुद्रा का दर्शन, मोहनिद्रा को दूर कर देता है।

527. पाप से बचना हो तो मंदिर जाओ और संताप से बचना हो तो अंदर आओ।

528. जिन्हें मंदिर ही दूर लगता है, उन्हें शुद्धात्मा तो कोसों दूर है।

529. पवित्रता का बढ़ना अर्थात् आनन्द का बढ़ना।

530. किसी बाह्य क्रिया का नाम धर्म नहीं। जहाँ सब क्रियाओं का अंत होकर, आनन्द हो वह धर्म है।

531. धर्मी आत्मा के बाहर धर्म की कल्पना मिथ्या है।

532. मुक्ति के लिए पैसा नहीं, सच्ची समझ चाहिए।

533. सब दु:खों का मूल, पर में एकत्व-ममत्व ही है।

534. आत्मा एक क्षण के लिए भी भगवान से पामर नहीं होती, हमें मात्र भ्रम हो जाता है।

535. सुख के लिए पर की याद आना, आपकी अज्ञानता का सूचक है।

536. जिनवचन मात्र सुनने के लिए ही नहीं हैं। इनका तो सेवन और पाचन भी होना चाहिए।

537. मोक्षमार्ग को गम्भीरता से न लेने वाले, कभी सुखी नहीं हो पाते।

538. समझाने से नहीं, समझने से आत्मकल्याण होता है।

539. जो पर्याय में खुश है, उन्हें सुख की खबर ही नहीं है।

540. जहाँ स्पर्श, रस, गंध व वर्ण पाया जाये, वहाँ सुख हो ही नहीं सकता।

541. आत्मा की शक्ति पहचानने का नाम पुरुषार्थ है।

542. कुछ करने का नाम पुरुषार्थ नहीं, पुरुषार्थ की बरबादी है।

543. भीड़ भी सत्य को नहीं बदल सकती, अत: सत्य के लिए सब की नहीं, रब की सुनिये।

544. अपराध करना सरल है, पर फल भोगना बहुत कठिन है।

545. चाहे आज मानो या अनंत काल बाद मानो, पर भोग से दु:ख ही आता है, सुख कभी नहीं आता ?

546. परिणामों का फल दूसरे को नहीं, स्वयं को ही मिलता है। अत: परिणामों की सदा सम्हाल रखना।

547. दुबारा किसी माँ के पेट में न आना, स्वयं पर बड़ी दया है।

548. उदासी अर्थात् दुखी रहना नहीं, बल्कि आत्माश्रय से प्रसन्न रहना है।

549. दु:ख जीवन की हार है और सुख जीवन की जीत।

550. मोही तो सदा स्वाभाविक दुखी है, उसे दुख के लिए अलग से कुछ नहीं करना पड़ता।

551. सच्चा सुख उन्हें मिलता है, जिन्हें सच्चे दु:ख की खबर हो।

552. दु:ख सामग्री से नहीं, विपरीत मान्यता से आता है।

553. हमें संयोग में सुख दिखता है और ज्ञानी को उसके लक्ष्य मात्र में दु:ख दिखता है।

554. महानता का नाप गुणों से होता है, संयोगों से नहीं।

555. सब हमारी माने, ये सुख का कारण नहीं है। हम भगवान की मानें, ये सुख का कारण है।

556. आत्मकल्याण के सिवा अन्य कार्यों को करना अनर्थदण्ड है।

557. आकुलता अर्थात् दु:ख हुआ और कर्म बंध चालू हो गया। अत: कर्मबंध से बचने के लिए सदा प्रसन्न रहें।

558. इच्छा और बाहर के कार्य की मैंचिंग का नाम पुण्य उदय है।

559. गुरु बनना आसान है, परन्तु शिष्य बनना कठिन।

560. इच्छा के नहीं होने का नाम ही तो मोक्ष है।

561. सुख और दु:ख का कारण, हमारे परिणामों में ही है और कहीं नहीं।

562. हमें दूसरों को नहीं, अपनी ही गलतियों को हटाना है।

563. बिना कुछ बाहर में हुए ही मिथ्या मान्यता से जीव अनंत दुखी है।

564. आज जिनवाणी लेने वालों की नहीं, उसे अच्छे से देने वालों की कमी है।

565. कमी खोजना आसान है, परन्तु गुण खोजना कठिन।

566. ये जीवन सोकर खोने के लिए नहीं, जागकर मुक्त होने के लिए मिला है।

567. गुरु - जिसे देखकर, आत्मा की याद आ जाये।

568. गुरु - जिसमें लघुता का अथाह समुन्दर दिखाये।

569. गुरु - जिनके जैसा होने को मन ललचाये।

570. गुरु - जिसको देखते ही सुखमयी जीवन शुरु हो जाये।

571. गुरु – जिसकी हर बात सीखने को, मन में हो जावें हलचल शुरु।

572. गुरु – जिनके मार्गदर्शन में दर्शनमोह होता है दूर।

573. गुरु – जिनके बिना नहीं होता मोक्षमार्ग शुरु।

574. सच्चा मित्र, आत्मा।

575. पर में मित्रता, एक कल्पना।

576. सच्ची मित्रता, मुक्ति।

577. आंशिक मित्रता, रत्नत्रय।

578. पंचपरमेष्ठी से, व्यवहार में मित्रता।

579. मोह-राग-द्वेष से, सदा शत्रुता।

580. अनंत गुणों में आपस में, सदा से मित्रता।

581. मित्रता और शत्रुता, मात्र अज्ञान की कल्पना।

582. मित्र की कामना, आत्मा से शत्रुता।

583. विकार से मित्रता, चार गति की यात्रा।

584. आत्मा से मित्रता पंचम गति की यात्रा।

585. पर्याय की त्रिकाली से मित्रता, यही है सुख और आनंदमयी जीवन की आधारशिला।

586. विकल्प, अज्ञान की संतान है।

587. जीतने के पहले ही हारना हो तो निगेटिव सोचो।

588. जो निंदा के पीछे अच्छे काम छोड़ देते हैं, वे कभी भी और कोई भी अच्छा काम नहीं कर पाते।

589. विपरीत संस्कार अर्थात् पर में सुखबुद्धि।

590. असफलता की पहली सफलता, बहाने बनाना है।

591. दुखी रहना हो तो निरंतर पर को लक्ष्य बनाओ।

592. दुखी न होना , स्वयं को निरन्तर ज्ञानदान देना है।

593. पर्याय में अहं ही भावमरण है।

594. पराधीनता का मूल, भोगों में सुखबुद्धि।

595. जो अब भव न बढ़ाये, उसे बुद्धिमान कहते हैं।

596. अहंकार से पुण्य क्षीण होता है।

597. जिनवाणी अपने दोष निकालने के लिए है, दूसरे के दोष देखकर कषाय करने के लिए नहीं।

598. दूसरों के दोष देखने से, पुण्य क्षीण होता है।

599. मायाचारी से काम नहीं बनता, बल्कि भव बढ़ता है।

600. हम धर्मात्मा दिखना चाहते हैं, बनना नहीं।

601. विपरीत संस्कारों की पुनरावृत्ति का नाम है, पंचेन्द्रिय के भोग।

602. भोगना पाप है और भोग में सुखबुद्धि महापाप।

603. कर्ज लेकर बड़े बनने की सोच, गरीब बनने का सबसे आसान तरीका है।

604. हमारा भला-बुरा धन से नहीं, हमारे परिणामों से होता है।

605. सारे जगत की व्यस्तता का दूसरा नाम, विकल्प करना है।

606. परिणाम बिगड़ने का मूल, अज्ञानता है।

607. परिणाम बिगाड़ने से दूसरे का नहीं, अपना ही बुरा होता है।

608. क्षमा, क्षमावाणी पर्व पर नहीं। जब अपराध हो, तभी माँगनी चाहिए।

609. ज्ञाता न रहना, अपराध है।

610. जिसकी पर्याय दृष्टि होती है, उसे पर्याय पर्याय की ही चिंता सताती है।

611. दुखी रहना और दूसरे को दुखी करना, ये दोनों पाप हैं।

612. भयभीत नहीं पर सावधान अवश्य रहें।

613. पाप का उदय आना अर्थात् पुराना कर्ज चुकना।

614. टेंशन अर्थात् बिना विचारे स्वयं को दिया जाने वाला दुःख।

615. दूसरे की चिंता अर्थात् स्वयं की चिंता।

616. मोह का नाश ही, आत्मा का प्रकाश है।

617. पर में सुखबुद्धि, सतत् चलने वाला भिखारीपना है।

618. दुखी न होना, स्वयं को अभयदान देना है।

619. जो नरक और तिर्यंच गति से सदा को बचायें, उसका नाम है शुद्धात्मा की श्रद्धा।

620. अज्ञानता अधर्म है और सम्यग्ज्ञान धर्म।

621. पाप का नाप दु:ख से करो, संयोगों से नहीं।

622. वीतरागता ही अनुकूलता है।

623. दुखी अपनी कषाय से होता है और इलाज पर में करता है।

624. हमारी विरोधी कषाय है और कोई नहीं।

625. वात्सल्य में बाधक, औदयिक भाव।

626. हर विवाद का समाधान-स्याद्वाद।

627. जिनशासन अर्थात् आत्मानुशासन।

628. मान-सम्मान लेने की नहीं देने की चीज है।

629. पर के लक्ष्य से सिर्फ दुख मिलता है दुख।

630. लाभ-हानि मोही की कल्पना है, नहीं तो पुद्गल के परिणमन के अलावा है ही क्या।

631. ये शरीर एक सजा है, इसके आश्रय से मजा की कल्पना ही मिथ्या है।

632. मोक्षमार्ग में दूसरे की मदद की नहीं, स्वयं के अदब की जरूरत है।

633. हर समस्या का समाधान, आत्मा में विश्राम।

634. पाप पोषक कथा का नाम ही विकथा है।

635. जो दिल के बड़े होते हैं, वे ही महापुरुष बनते हैं।

636. छोटी सोच, बड़ा अपराध।

637. वात्सल्य बांटो, विनय मिलेगी।

638. जो निर्दयी हैं, वे बड़े दया के पात्र हैं।

639. सबसे बड़ा अपराध, पर्यायदृष्टि।

640. सृष्टि बदलने के लिए सृष्टि नहीं, मात्र दृष्टि बदलनी है।

641. चिंता से पुण्य और अधिक तेजी से क्षीण होता है।

642. रोते वे हैं, जो अज्ञानी होते हैं।

643. हमारा जीवन अनादि-अनंत है, ये 50-60 वर्ष नहीं। अत: सोचना भी है तो उसकी सोचो।

644. नीच गोत्र में जाने का सबसे सरल उपाय है, दूसरे की निंदा करना।

645. जो निंदा से घबराते हैं, वे कभी भी निंदनीय कार्य नहीं करते हैं।

646. प्रशंसा चाहने से नहीं, प्रशंसनीय कार्य करने से मिलती है।

647. आत्मा को छोड़, अन्यत्र कहीं भी सुख की खोज, आत्मा की उपेक्षा है।

648. विकल्प ही अनुकूलता है और विकल्प ही प्रतिकूलता है।

649. जीव में जानने-देखने की ताकत तो हैं, परन्तु पुण्य-पाप करने की नहीं।

650. पाप करना आसान है, पर फल भोगते-भोगते तो एक-एक जीव परेशान है।

651. सच्ची दया तो जीव को मोक्षमार्ग में लगाने का नाम है।

652. नियम बिना, परिणाम नहीं रुकते।

653. अभक्ष्य से बचने का उपाय, संयम।

654. हार का निश्चित कारण, ओवर कॉन्फिडेंस।

655. हार, जीत का उद्घाटन है।

656. विषयों की मूर्च्छा से, जीव सर्म्मूच्छन जीव बनता है।

657. सीखने की कोई उम्र नहीं होती। अत: सदा जिज्ञासु बने रहो।

658. भगवान तो पर्याय को बनना है, आत्मा तो सदा का बना बनाया भगवान है।

659. सुख आत्मा की पर्याय है, अत: विषय में सुख हो ही नहीं सकता?

660. बड़े बनने के लिए धन नहीं, बड़प्पन चाहिए ?

661. पाप करने से पहले यदि उसके फल का विचार कर ले तो पाप न करे।

662. अपना घर भूले और पाप में फूले।

663. नहीं करता कर्म चूक, एक-एक परिणामों के फल में देगा अनंत दु:ख।

664. जो मोह की बातों में आया, उसको मोह ने खाया।

665. जैसे लोक में इच्छापूर्ति में जान लगा देते हो, ऐसे ही धर्म आराधना में लगाओ।

666. समाधि से संसार कटता है और आत्मघात से संसार बढ़ता है।

667. समाधि स्वतंत्रता से की जाती है और आत्मघात पर से परेशान होकर।

668. समाधि जीवन का सार है और आत्मघात जीवन की हार।

669. समाधि एक तपस्या है और आत्मघात एक ताप।

670. आत्मघात पाप परिणाम है और समाधि एक धर्ममयी परिणाम।

671. संथारा मृत्यु नहीं, अमरता का उद्घाटन है।

672. समाधि आत्मघात नहीं, जीवन की अंतिम साधना है।

673. आत्महत्या दु:खदायी घटना है और समाधि आनंद उत्सव।

674. समाधि समता का नाम है और आत्मघात क्रोध और द्वेष का।

675. समाधि से मुक्ति मिलती है और आत्मघात से नरक।

676. पाप – जो भी कार्य दुख उत्पन्न करे, उसे पाप कहते हैं।

677. अपराधी, चाह कर भी प्रसन्न नहीं रह पाता।

678. मोह अर्थात् आत्मघाती परिणाम।

679. ज्ञान, हर समस्या का एक मात्र समाधान।

680. सब अनर्थों का मूल, मोह।

681. मोह – जो दु:ख में सुख की कल्पना करा दे।

682. यदि होगी गुणों पर दृष्टि तो स्वर्ग जैसी लगेगी ये सारी सृष्टि।

683. हम अपनी गलती से दु:खी हैं पर गलती दूर किये बिना ही, सुखी होना चाहते हैं।

684. कर्म हमारे शत्रु नहीं हैं, ये तो मात्र हमारे अपराधों का फल है।

685. संसार अर्थात् अपराधों का फल भोगने की जेल।

686. सम्यक् प्रतीति, अज्ञान निवृत्ति का सूचक है।

687. वासना कभी बूढ़ी नहीं होती, वह तो सदा जवान रहती है।

688. विपरीत श्रद्धान का नाम ही तो अनंत भोग है।

689. जिसे आत्मा की श्रद्धा नहीं, वह तो जीता-जागता मुर्दा है।

690. धर्म – धर्मी आत्मा की आनंदमयी पर्याय का नाम है, किसी बाह्य क्रिया का नहीं।

691. विपरीत श्रद्धा में, आत्मा का अनंत अनादर है।

692. जिसे विषयों में सुख बुद्धि है, उसे आत्मा में और मोक्षमार्ग में दु:ख बुद्धि।

693. ये जीवन फिरने को नहीं, तिरने को मिला है।

694. जीवन की कमाई, वीतरागता का बढ़ना।

695. अनासक्त रहना दौलत है और आसक्त रहना दरिद्रता।

696. अणु-अणु की स्वतंत्रता की समझ का नाम है, स्वतंत्रता दिवस।

697. कर्म से हम परतंत्र नहीं हैं, इसका नाम है स्वतंत्रता।

698. हमें स्वतंत्र होना नहीं। हम तो सदा स्वतंत्र हैं।

699. हम पर में कुछ नहीं कर सकते, ये है स्वतंत्रता।

700. कोई किसी के आधीन नहीं है, इसका नाम है स्वतंत्रता।

701. द्रव्य की पर्याय में नहीं चलती, इसका नाम है स्वतंत्रता।

702. एक पर्याय की दूसरी पर्याय में नहीं चलती, इसका नाम है स्वतंत्रता।

703. एक-एक पर्याय षटकारकीय स्वतंत्र है, ये है सच्ची स्वतंत्रता।

704. हमें सुख के लिए पर की याद नहीं आती। ये है सच्ची स्वतंत्रता।

705. हमें हमारा स्वामी अपने अंदर ही दिखे, बाहर न दिखे ये है स्वतंत्रता।

706. अब हम मोह में न नाचे, ये है सच्ची स्वतंत्रता।

707. पर्याय दृष्टि छूट जाने का नाम है सच्ची स्वतंत्रता।

708. स्वतंत्रता का विकल्प मिट जाये, इसका नाम है स्वतंत्रता।

709. हम पर से प्रभावित न हों, वो है सच्ची स्वतंत्रता।

710. हम अपने को देह रहित देखें ये है सच्ची स्वतंत्रता।

711. निमित्त को अकर्ता देखना, ये है स्वतंत्रता।

712. ज्ञेयों से ज्ञान न दिखकर, ज्ञान से ज्ञान दिखना। ये है सच्ची स्वतंत्रता।

713. विषयों में सुख न लगे, तब हो सच्ची स्वतंत्रता।

714. मैं निर्बन्ध तत्त्व हूँ, ऐसी प्रतीति का नाम है स्वतंत्रता।

715. द्रव्य भाव और नोकर्म से निवृत्ति का नाम है पूर्ण स्वतंत्रता।

716. जिन्हें सत् स्वभाव की खबर नहीं, वे सज्जन नहीं, दुर्जन हैं।

717. जीवन में विकास का पैमाना वीतरागता है, न कि पूछपरख।

718. हम जगख्याति के लिए नहीं, आत्मख्याति के लिए जन्मे हैं।

719. भावना का फल आता ही आता है, अतः सदा उत्कृष्ट भावना भायें।

720. सद्विचार सुख का द्वार है।

721. आपको 5-10 वर्ष की सुख-सुविधा चाहिए या अनंतकाल की की दुविधा ?

722. देखने वाले आत्मा को न देखना तो अंधापन है।

723. बंधन की फीलिंग संसार है और मुक्ति की फीलिंग मुक्ति।

724. आत्मा में आराम है, आत्मा के बाहर रहना तो हराम है।

725. ये मार्ग मनोरंजन का नहीं, निरंजन होने का है।

726. निर्विचारता कहो या मोह कहो, एक ही बात है। दोनों में कोई अन्तर नहीं है।

727. जिनरूप का दर्शन, चिद्रूप के दर्शन के लिए किया जाता है।

728. अज्ञान अर्थात् कम ज्ञान नहीं है बल्कि आत्मज्ञान का न होना है।

729. सुख कहो या ज्ञान कहो एक ही बात है क्योंकि ये दोनों अविनाभावी हैं।

730. स्वभाव से पूर्ण सीझने का नाम, सिद्ध दशा है।

731. जिन्हें निजधन की खबर है, वे सदा धनी हैं।

732. निर्धनता का मूल, कृपणता।

733. मुक्ति का मूल, मुक्त स्वरूप आत्मा।

734. भ्रमण का मूल, पर में सुख बुद्धि।

735. ये भय का नहीं समझ का मार्ग है।

736. भय से कार्य बिगड़ता है और निर्भयता से कार्य बनता है।

737. ध्रुव दृष्टि बिना, मोक्षमार्ग में एक कदम भी नहीं बड़ा जा सकता।

738. भक्ति कभी थकती नहीं ।

739. चारित्र का नियामक, श्रद्धा।

740. ना समझी, गुरु शिष्य को दूर कर देती है।

741. जो गुरु से दूर रहता है, वो सारा जीवन खोता है।

742. प्रतिक्रमण का मूल, दोषों में दु:ख लगाना।

743. गुरु की डांट, अनंत काल का ठाट दिलाती है।

744. गुरु से मोह डरता है, अत: जिन्हें मोह दूर करना हो, वे गुरु के नजदीक रहें।

745. सेवा बिना, साधना असंभव है।

746. जो संयम में सहायक हो, वो साधर्मी और जो विषयों में सहायक हो, वो मोही।

747. मोहियों की संगती डुबायेगी और ज्ञानियों की संगति तिरायेगी।

748. भोग अर्थात् भ्रम और योग अर्थात् श्रम।

749. सरल लोगों को मार्ग सरल है और कठोर लोगों को विरल है।

750. विषयों में झुकना पाप है और पंच प्रभु की ओर झुकना पुण्य और स्वभाव में झुकना धर्म।

751. जैसे शक्कर बिना मिठास नहीं होती, वैसे ही धर्मी बिना धर्म नहीं होता।

752. पाप अर्थात् पतन और धर्म अर्थात् ऊर्ध्वगमन।

753. जो स्वभाव से दूर करे, वो सब पाप ही है।

754. आत्मा तो सदा प्रभु है, जो उसका अभिनन्दन करता है, वो प्रभु बनता है और जो उसकी विराधना करता है, वो पामर बनता है।

755. साधर्मी की पहिचान, प्रचुर वात्सल्य।

756. निर्णय का मूल, नि:शंकता।

757. भय का मूल, अपराध।

758. विकार का मूल, पर में सुखबुद्धि।

759. सर्व दुखों का मूल, आत्मविस्मरण।

760. हिंसा का मूल, प्रमाद।

761. जरा सी चूक अनंत काल मुक्ति से दूर।

762. वीतरागता का ही दूसरा नाम मोक्ष है और राग का संसार।

763. मुक्ति को लक्ष्य बनाओ, नहीं तो निगोद जाने को तैयार हो जाओ।

764. बड़ों का अनादर, जीवन में नियम से दरिद्रता लायेगा।

765. दीनता-हीनता की त्रैकालिक निवृत्ति का नाम है मुक्ति।

766. इच्छा रूपी बाणों की चुभन से बचने का नाम है, निर्वाण।

767. अब कभी दुखी न होने का नाम है मोक्ष।

768. कर्मों की पूर्ण विदाई का नाम है मोक्ष।

769. जन्म-मरण के नाश का नाम है मुक्ति।

770. छूटने का नाम है मोक्ष।

771. मुक्तस्वभाव की पूर्ण प्राप्ति का नाम है, मोक्ष।

772. अब किसी माँ के पेट में दुबारा न आने का नाम है, मोक्ष।

773. अनंत सुख भोगने का नाम है, मोक्ष।

774. अशरीरी दशा का नाम है, मोक्ष।

775. मोक्षमार्ग में अकेला ज्ञान ही नहीं, साथ में वैराग्य भी चाहिए।

776. वैराग्य अर्थात् आत्मा के आनंद के आगे, पूरी दुनिया फीकी (नीरस) लगना।

777. यदि जीवन में उत्साह नहीं है, तो आपका बुढ़ापा आ गया है।

778. सृष्टि की सर्व समस्याओं का दूर करने का एक मात्र समाधान, आत्मदृष्टि।

779. हमें दुनिया नहीं, दुनिया का ममत्व छोड़ना है।

780. भोग तो एक समय का है, पर उसमें सुख बुद्धि सदा ? अतः अब सोचो बड़ा क्या है ?

781. पाप से भी बड़ा पाप, उसका खेद न होना है।

782. जीव की राग से रक्षा करने का नाम है, सच्ची दया।

783. मुक्ति से कम अर्थात् घाटा ही घाटा।

784. फायदे नुकसान की सोचो, पर बाहर से नहीं, आत्मा के लक्ष्य से सोचो।

785. स्वानुभव ही, जिनशासन है।

786. स्वयं से, बेईमानी न करने का नाम ही तो अनुशासन है।

787. ज्ञेयशक्ति का नाम ही तो भोग है।

788. कषाय तोड़ती है और विशुद्धि जोड़ती है।

789. हमें कोई और नहीं, हमारी कषाय ही परेशान करती है।

790. मुनि – जिनका आत्मा के सिवा कहीं और मन न लगे।

791. ज्ञान से ज्ञायक को न देखकर, अन्य को देखना ही तो ज्ञान की बरबादी है।

792. जीवन भोजन से नहीं, जीवत्वशक्ति के परिणमन से चलता है।

793. मोही एक भव की चिंता करता है और ज्ञानी अनंत भव की सोचते हैं।

794. पेट भरने की नहीं, अब दुबारा किसी माँ के पेट में न आना पड़े, इसकी सोचो ?

795. सफलता धन कमाने से नहीं, उससे सुख बुद्धि हटाने में है।

796. मरण से डरो नहीं। बल्कि अब न मारना पड़े, ऐसा कोई काम करो ?

797. यदि आपने अपना आत्मकल्याण नहीं किया तो आपको अनंतकाल तक कोई भी और कभी भी सुखी नहीं कर सकता।

798. राग, रोग से भी ज्यादा खतरनाक है।

799. घरों में क्लेशों का मूल, पर को अपने अनुसार परिणमाने का भाव।

800. दोष छिपाना अर्थात् दोष बढ़ाना।

801. अज्ञानी का भ्रम, ज्ञेयों में सुख-दु:ख मानना।

802. दु:ख दूर करना है तो दुनिया को नहीं, अपनी कषाय को हटाओ।

803. क्रोध अर्थात् स्वयं का पतन।

804. मान अर्थात् निरंतर पर को नमन।

805. प्रमादी हर क्षण करता है बरबादी।

806. भोग और सुख, एक-दूसरे के विरोधी हैं।

807. भोगों में सुखबुद्धि, बिना कुछ करे ही अनंत दुखी करती रहती है।

808. भगवान की बात न मानना, उनकी अविनय करना है।

809. प्रतिकूलता उदय का कार्य है और दुखी न होना हमारा पुरुषार्थ है।

810. व्यर्थ हंसोगे तो चार गति में ही फंसोगे।

811. शरीर में मग्न रहना ही तो मांस भक्षण है।

812. फल क्रिया का नहीं, आपके परिणामों का लगता है। अत: सदा अपने परिणाम सम्हालो।

813. चिंता तो साक्षात् चिता है और चिंता करने वाला मुर्दा।

814. मरण का भय उसे होता है, जो आत्मार्थ में सोता है।

815. आचरण, श्रद्धा का अनुचरण करता है।

816. सुधार का सबसे पहला सोपान, श्रद्धा का सम्यक् होना है।

817. दृष्टि सुधरी मतलब सारी सृष्टि सुधरी।

818. पर्याय दृष्टि अर्थात् दीनता।

819. जिन्हें सुख दूसरे में दिखता है, वे सदा भिखारी हैं।

820. जो कषाय पोषण में साथ दें वो मित्र नहीं शत्रु हैं।

821. हमें कोई और नहीं हमारे दोष ही, श्रीगुरु से दूर करते हैं।

822. दोष दूर करने का नाम है मोक्षमार्ग।

823. औदयिक भावों की सुरक्षा अर्थात् पारिणामिक भाव उपेक्षा।

824. प्रशंसा चाह से नहीं आत्महित के उत्साह से मिलती है।

825. बहुत सारे अपराध और सजा से बचने का सरल उपाय - नियम लो।

826. हमारा जैसा उद्देश्य रहता है, हम वैसा ही लाभ लेते हैं।

827. वस्तुस्वरूप से देखो तो न हम किसी के अपराधी हैं और न ही कोई मेरा।

828. दु:ख से बचने का उपाय संक्लेश नहीं, समता है।

829. यदि आप दुखी हो रहे हैं तो आप वस्तुस्वरूप को भूल रहे हैं।

830. ये जीवन लक्ष्य नहीं पड़ाव है, अत: मात्र अभी की नहीं, आने वाली अनंत की सोचो।

831. चाहे रोओ या गाओ। पर नहीं करेगा तुम्हें कर्म माफ, वो तो एक-एक पर्याय का चुकता करेगा हिसाब ?

832. ये मार्ग साथ-वाथ का नहीं, मुक्ति रमणी के नाथ बनने का है।

833. मोहियों के संग, सुख असंभव और ज्ञानियों के संग, दु:ख असंभव।

834. बहुत से विवादों से बचना हो तो बुद्धु बनकर रहो।

835. बंधन से रक्षा करना, रक्षाबंधन है।

836. पर की रक्षा के भाव में भी बंधन है। अत: उससे बचना परमार्थ रक्षाबंधन है।

837. निर्बन्ध के आश्रय से सुरक्षित रहना, रक्षाबंधन है।

838. रक्षा की अपेक्षा रखना ही तो बंधन है।

839. जिनशासन की रक्षा करना, रक्षाबंधन है।

840. देव-शास्त्र-गुरु की रक्षा करना, रक्षाबंधन है।

841. संयम की रक्षा करना, रक्षाबंधन है।

842. अपने जीवन से जिनशासन की अप्रभावना न होने देना, ये है रक्षाबंधन।

843. साधर्मी के प्रति वात्सल्य रखना, रक्षाबंधन है।

844. विभावों से स्व और पर को बचाना, रक्षाबंधन है।

845. सम्यक्त्व के 25 दोषों को न लगने देना, रक्षाबंधन है।

846. धर्मी धर्मायतन के लिए सर्वस्व समर्पण का भाव, रक्षा-बंधन है।

847. अन्याय-अनीति-अभक्ष्य से बचना, दूर रहना, रक्षा-बंधन है।

848. निर्बन्ध की अनुभूति ही रक्षाबंधन है।

849. मोह-राग-द्वेष से बचना रक्षाबंधन है।

850. विपरीत विचारों से बचना, रक्षाबंधन है।

851. स्वयं सुरक्षित आत्मा का ज्ञान कराके, सबको सुरक्षित करना, रक्षाबंधन है।

852. चतुर्गति से बचना और सबको बचाना, रक्षाबंधन है।

853. बंधन के मूल आठों कर्मों को जीतना, रक्षाबंधन है।

854. यदि रुचि यथार्थ है तो सबकुछ यथार्थ होता है, अन्यथा नहीं।

855. यथार्थ रुचि, लक्ष्य प्राप्ति में अधिक समय नहीं लगाती।

856. आत्मा का राग नहीं, राग संबंधी अपने ज्ञान का करता है।

857. जीवन में आराधना करो, नहीं तो प्रभावना करो, अन्य किसी कार्य में जीवन लगाना जीवन की बरबादी है।

858. मोही सामर्थ्य छिपाता है, ज्ञानी सामर्थ्य बढ़ाता है।

859. भोग और कल्पना, दोनों पर्यायवाची चीज हैं।

860. अज्ञानता से हमें, ज्ञान से दिखने वाली वस्तु अपनी लगती है।

861. सबसे बड़ा शत्रु, अज्ञान।

862. अंदर सुख है, बाहर दु:ख है।

863. दोष देखना ही सबसे बड़ा दोष है। अत: सबको निर्दोष आत्मा देखो।

864. निन्दनीय लोग, दूसरों की निंदा करते हैं।

865. वीतरागता से प्रशंसा और राग से निंदा मिलती है।

866. सदा सबसे गुण ग्रहण करो, आप आपोआप गुणवान बन जाओगे।

867. छोटे दिल वाले, कभी बड़ा निर्णय नहीं ले सकते ?

868. मोही जो भी करता है, विषय में सुख पाने के लिए ही करता है।

869. कषाय से होने वाले दु:ख को भोगों से दूर करने की कल्पना, स्वयं को धोका है।

870. आपके पाप का फल आप ही भोगोगे, चाहे सबके साथ मिलकर पाप करो या अकेले ?

871. भाई निर्णय तो करो कि सुख आत्मा में ही है कहीं और नहीं। न जीवन बदल जाये तो कहना ?

872. हम सचमुच कैसे हैं ? सिद्ध भगवान जैसे हैं। बाकी सब तो स्वांग है।

873. स्वभाव की तरफ पीठ, अनंत दुखों की रीत। स्वभाव की सम्मुखता, सुख का कभी न टोटा।

874. सुनने से नहीं, निर्णय से मोक्षमार्ग खुलता है।

875. स्वदया अर्थात् वीतरागता प्रगट करना।

876. पात्रता हो तो सफलता में देर नहीं लगती।

877. समझाने से नहीं, समझने से समझ में आता है।

878. नासमझी, हर जगह हराती है।

879. प्रभुता का आधार, लघुता।

880. पर्याय मात्र के आदर में, आत्मा का अनादर है।

881. अनंत पाप के पिंड का नाम है मिथ्या श्रद्धा या अभिप्राय।

882. जिसके चित्त में जिज्ञासा नहीं, वो जीव तो बूढ़ा है।

883. जिसका मोक्षमार्ग में उत्साह कभी कम नहीं होता, उसका नाम है जवान।

884. एक-एक भावों का फल आयेगा और जगत का एक-एक जीव फड़फड़ायेगा।

885. हिंसा का सबसे पहला शिकार, हिंसा करने वाला ही होता है।

886. बुरी सोच, आदमी को बुरा बना देती है।

887. माया ठगनी, सबसे पहले स्वयं को ही ठगती है।

888. मूढ़ता - हित-अहित के निर्णय बिना किया गया कार्य।

889. सब पापों की जड़ पर्यायदृष्टि है।

890. पाप परिणाम, नियम से पाप का उदय लाता है।

891. अपेक्षा का जहर, उपेक्षा दिलाता है।

892. जितने-जितने दोष, उतना-उतना दु:ख और जितने-जितने गुण उतना-उतना सुख।

893. कषाय रोग है और सम भाव निरोग।

894. जो जीव नैतिक नहीं, वो धार्मिक तो हो ही नहीं सकता ?

895. जिसे वस्तु का सहज परिणमन स्वीकार नहीं, उसे क्रोध आता है।

896. मानी को ज्ञानी, बिल्कुल अच्छे नहीं लगते।

897. सबसे पहले स्वयं पर दया कर लो अर्थात् अपने को पंचपरावर्तन से बचा लो।

898. कुगुरु से बड़ा कोई शत्रु नहीं।

899. मैं सब जानता हूँ, ये अज्ञानी की सबसे बड़ी निशानी है।

900. यदि आप बड़े हैं तो यहाँ कहाँ चार गति में खड़े हैं ?

901. खूब करो पाप, नहीं बचाने आयेगा कोई माई-बाप ?

902. घमंड से जीव बड़ा नहीं, सड़ा बनता है।

903. जिन्हें साथ चाहिए, वे तो सदा अनाथ ही हैं।

904. पूरे विश्व में हमें और कोई नहीं, हमारा मोह और कषाय ही परेशान करते हैं।

905. यदि प्रभावना करना हो तो अपना आचरण सुधारो।

906. खुश हो जाओ क्योंकि स्वभाव को कभी मृत्यु नहीं आती।

907. दुखी होना, आपकी दोषग्राही दृष्टि को बतलाता है।

908. दूसरे से चिड़ो नहीं, स्वयं प्रशंसनीय बनो।

909. मुक्ति का मूल, सही दृष्टि और दृष्टि का मूल सही निर्णय।

910. सम्यग्दर्शन अर्थात् भ्रम का खजाना।

911. मिथ्यादृष्टि अर्थात् स्वयं को धोखा देने वाला।

912. सुख का लक्षण निराकुलता है, सुविधा नहीं।

913. गलती गलती न लगना ही, सबसे बड़ी गलती है।

914. अपराध की सबसे बड़ी सजा घुटन है, जो अपराध करते ही चालू हो जाती है।

915. ज्ञान और वैराग्य पूँजी है और रत्नत्रय व्यापार।

916. जीवन को नष्ट करने वाला सबसे सरल साधन है, पर की चिंता।

917. सोचो ? जीवन का कितना अंश विषय-कषाय में जा रहा है और कितना ज्ञानाराधना में।

918. मुक्ति की लुटेरी है, विषयों में सुख बुद्धि।

919. सब कुछ होकर भी दीनता का नाम है मिथ्यात्व।

920. पॉजिटिव सोच का नाम सम्यग्दर्शन और नेगेटिव सोच का नाम है मिथ्यादर्शन।

921. यदि आप दु:खी हो रहे हैं तो जरूर कुछ न कुछ नेगेटिव ही सोच रहे होंगे।

922. विपरीत विचार से बड़ा कोई शत्रु नहीं और तत्त्व विचार से बड़ा कोई मित्र नहीं।

923. जिद से बनते काम भी बिगड़ जाते हैं।

924. जो जीवन का अमन-चैन छीन लें उसका नाम है अपराध।

925. अपराध के बाद आने वाला क्षोभ ही प्रथम क्षमा है।

926. जीवन का सबसे बड़ा घाटा परिणामों का बिगड़ना।

927. शांति हर कीमत में सस्ती है।

928. जिज्ञासु को कुछ भी असंभव नहीं।

929. जो पाप छिपाते हैं, वे छिप-छिप कर जीवन बिताते हैं।

930. बिना समझे किया हुआ हर कार्य मिथ्या ही होता है।

931. जिनवाणी की हर पंक्ति निर्णय के लिए लिखी गई है, मात्र पढ़ने के लिए नहीं।

932. निंदा करना तो दूर सुनना भी महापाप है।

933. मान किसी की जान तो ले सकता है, पर किसी से ज्ञान नहीं ले सकता ?

934. मिथ्या अनुमान इस जीव को, क्षण-क्षण में परेशान करते हैं।

935. सच बात है दुनियाँ में पवित्रता की नहीं, पुण्य की ही चलती है। उदाहरण - सीता।

936. यदि धन की जगह, ज्ञान सुख का साधन दिखने लगे तो मुक्ति खुद-ब-खुद हमारे पास चल कर आवें।

937. इस जीव का सबसे ज्यादा अहित, इस जीव के विकारी भावों ने ही किया है।

938. जो व्यक्ति गंभीर नहीं होते, वे जीवन में सब कुछ खोते ही खोते हैं।

939. जिसने मन की मानी, उसको क्षण-क्षण हानि।

940. सच्ची समझ, कभी दुखी नहीं होने देती।

941. दु:खी वे हैं, जो विषयों की ओर झुके हैं।

942. सच ! आत्मकल्याण कर लो ? नहीं तो अनंत काल रोने तैयार हो जाओ।

943. पर्याय, पर्याय देखने नहीं, स्वभाव देखने मिली है।

944. मोह से मित्रता तो स्वयं से शत्रुता है।

945. वर्तमान पर्याय में, भूत का अंश भी नहीं आता अर्थात् एकदम फ्रेश।

946. पर्याय सुधारनी भी नहीं है, हर पर्याय अपने आप सुधरी ही पैदा होती है।

947. पर्याय में चाहे कितना भी पाप हो, वह द्रव्य स्वभाव को नहीं छूता।

948. सुख के पहले सुख का निर्णय अनिर्वाय है, अन्यथा सुख असंभव है।

949. प्रतिकूलता दु:ख नहीं देती, हम दुखी होते हैं, ये प्रतिकूलता है।

950. जितना भी दु:ख है, वह सब विराधना का फल है।

951. जो बाहर नहीं झांकता, वो सुखी है और जो अन्दर नहीं झांकता, वो दु:खी है।

952. अनंत दु:ख का कारण, उल्टी मान्यता और अनंत सुख का कारण, सच्ची मान्यता।

953. पक्ष रखने वाला बहरा होता है, वो किसी की नहीं सुनता ?

954. पर्याय सदा एक सी बनी रहे, ये असंभव है।

955. चिंता चाहे किसी की भी करो, फल दु:ख ही आयेगा।

956. भविष्य की चिंता, भविष्य बिगाड़ देती है।

957. नैतिकता देह है, तो धर्म उसका शृंगार ।

958. बाहर की सजावट सजा दिलायेगी और अंदर की सजावट भगवान बनायेगी।

959. भगवान् बनने का उपाय, अपने आपको बना बनाया भगवान देखें।

960. स्वयं को भगवान देखना द्रव्यानुयोग है और सबको भगवान देखना चरणानुयोग।

961. ये होड़ का नहीं, होश का मार्ग है।

962. पहले सोचो, फिर करो, करके मत सोचो।

963. मोक्षमार्ग में और कुछ नहीं, सबसे पहले निर्णय की आवश्यकता है।

964. जो राग से जुदा है, वो तो खुद ही खुदा है।

965. सच्ची समझ ही आनंद की दाता है।

966. विवादों का मूल, अज्ञानता।

967. जो नहीं होते निंदा से प्रभावित, वो करते हैं मोक्षमार्ग में सबको आकर्षित।

968. आत्मघात से बड़ा कोई पाप नहीं और आत्मसाधना से बड़ा कोई धर्म नहीं।

969. धर्म परिणति में होता है, पाण्डाल में नहीं।

970. बड़े-छोटे का नाप, विशुद्धता, पवित्रता से होता है, धन से नहीं।

971. धन्य हैं वे जीव जिन्हें धन की नहीं, निजधन की महिमा है।

972. संयुक्त परिवार का मूल, सरलता।

973. दूसरे की निंदा करना पाप भाव है और स्वयं की निंदा करना पुण्यभाव।

974. संसरण का नाम ही, संसार है।

975. कुछ न करना पड़े, इससे बड़ी मुक्ति कोई नहीं है।

976. पाप के उदय में अच्छा करने पर भी, निंदा ही मिलती है।

977. प्रशंसा पुण्य का कार्य है और पवित्रता धर्म का।

978. धर्मी को पहिचानना, सबसे पहला धर्म है।

979. चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग की पात्रता पैदा करता है।

980. भय, सावधान करता है।

981. त्याग से पहले ग्रहण अनिर्वाय है, अन्यथा त्याग अधूरा है।

982. यदि सचमुच आत्मकल्याण करना है तो बारम्बार तत्त्वविचार करो।

983. अपनी मन की सुनने आये हो या जिनवाणी सुनने आये हों?

984. वचन का अहं, वचनातीत शुद्धात्मा को देखने नहीं देता।

985. हम दूसरे से नहीं, दूसरे के लक्ष्य से दुखी हैं।

986. पर्याय दृष्टि, बिना बाहर में कुछ हुए बिना ही अनंत कष्ट देती है।

987. सीखने की कोई उम्र नहीं होती।

988. अकेले में स्वाध्याय करने से, अपने चिंतन करने की कला प्रगट होती है।

989. जहाँ क्षण-क्षण में वैराग्य के प्रसंग उपस्थित हों, वहाँ हमें वैराग्य न आये, ये आश्चर्य है।

990. मार्ग का दर्शन किये बिना, कोई मार्गदर्शन नहीं कर सकता।

991. बड़ों की सीख, छोटों को भीख माँगने से बचाती है ?

992. चिढ़ने से काम और बिगड़ता है।

993. आगंतुक दु:ख, एक समय भी शांति से बैठने नहीं देते।

994. मोह को, सुख का शत्रु जानो।

995. पछताने वाले, कोई कार्य मत करो।

996. दु:ख का कारण प्रतिकूलता नहीं मोह है।

997. साथ, बाहर नहीं, अन्दर ढूँढ़िये।

998. किसी को कोई नहीं, अपने-अपने परिणाम ही दण्ड देते हैं।

999. विकल्पों से काम बनता तो नहीं, पुण्य और क्षीण होता है।

1000. बाहर के परिणमन में हमारा अत्यंताभाव है, अत: उसमें कुछ भी करना असंभव है।

1001. पर में सुख बुद्धि का नाम ही तो भोग है।

1002. नैतिकता, निश्चिन्तता ही प्रदान करती है।

1003. जीवन की बहुत सी समस्याओं का समाधान, अपनी गलती स्वीकारने में है।

1004. दुनिया का सबसे बड़ा परिवर्तन, विचारों का परिवर्तन है।

1005. छोटी सोच का नाम ही तो दरिद्रता है।

1006. भगवान का मिलना पुण्य उदय है और भगवान् आत्मा का मिलना पुरुषार्थ का उदय।

1007. राग दूसरे को प्रतिबद्ध करता है और ज्ञान आत्मा को।

1008. मिथ्या कल्पना, मुक्ति को छीन लेती है।

1009. खोटा कार्य, खोटा ही फल लायेगा।

1010. थोड़ा सोचो ! भगवान बनने से अच्छा कोई भी कार्य नहीं है, तो भी हम इसे छोड़ कर क्या कर रहे ?

1011. सारे अच्छे कार्यों का मूल विशुद्धता है।

1012. सबसे बड़ा कार्य, गुणग्राहकता।

1013. ज्ञान का मान न होना, महापुरुषार्थ है।

1014. निश्चिन्तता, सबसे बड़ा धन है।

1015. इस जगत में शांति से अधिक कुछ भी कीमती नहीं।

1016. जिनबिम्ब को भगवान् से कम मानना, महापाप है।

1017. उल्टी मान्यता का नाम ही तो सबसे बड़ा व्यसन है।

1018. जीवन की सार्थकता, सम्यक्त्व और संयम से है।

1019. प्रभुता में अपनापन न होना ही तो पामरता है।

1020. कहना बहुत आसान है, पर पाप से तो सारी दुनिया परेशान है।

1021. दुखी न होना पुरुषार्थ है।

1022. चिन्ता और मृत्यु पर्यायवाची ही हैं।

1023. जीव का पुरुषार्थ तो जानना-देखना है, कुछ करना तो मिथ्यात्व है, नपुंसकता है।

1024. अधर्म अर्थात् विपरीत मान्यता।

1025. जैनधर्म कोई संप्रदाय नहीं है, ये तो वस्तु की स्वतंत्रता बताने वाला धर्म है।

1026. धर्मी अर्थात् आत्मा तो आत्मा के आश्रय से जो हों, वो है धर्म।

1027. आत्मा के बाहर धर्म नहीं और आत्मा के अंदर कर्म नहीं।

1028. धर्म अर्थात् आत्मा की सुखमयी परिणति।

1029. दु:ख का कारण संक्लेशता और सुख का कारण विशुद्धता।

1030. इच्छा से वस्तु दूर होती है।

1031. कष्ट रोग का घर नहीं, राग का होता है।

1032. मुनिराज – जो मोक्षमार्ग में चलकर दिखायें।

1033. हमारी निन्दा कभी हो ही नहीं सकती, क्योंकि हम दोषों के नहीं, गुणों के पिण्ड हैं।

1034. जो मोक्षमार्गों को बेचारा समझते हैं, उन्हें विषयों का भिखारी समझो।

1035. जिन्हें सच्ची समझ होती है, वे कभी सिद्धान्तों से समझौता नहीं करते।

1036. ये झुकने का मार्ग है, झुकाने का नहीं।

1037. जो भोगों के दास हैं, वे मोक्षमार्ग से सदा उदास हैं।

1038. उत्साह बिना न तो आराधना हो सकती है और न ही प्रभावना।

1039. मनमानी अर्थात् जिनवाणी का विरोध करना है।

1040. सुख हाथ चलाने से नहीं, हाथ पर हाथ रखने से आता है।

1041. जहाँ विवेक नहीं होता, वहाँ अविनय होती ही है।

1042. आगंतुक दु:ख सूचना देकर नहीं आते, अत: सदा सावधान रहें।

1043. चिंतन की कमी से ही जीवन में चिंता बढ़ती है।

1044. चिता तो एक बार जलाती है, पर चिंता तो हर क्षण जलाती है।

1045. दूसरों से जलो नहीं, हो सके तो उनसे थोड़ा आगे चलो।

1046. स्वार्थी का अर्थ आत्मार्थी होता है, न कि भोगार्थी।

1047. जो संयम की रक्षा करता है, संयम उसकी रक्षा करता है।

1048. आपका जीवन जैन शासन का चेहरा है, अत: कभी खोटा जीवन मत जियो।

1049. जीवन मात्र जियो ही मत, एक क्षण चैतन्य का रस भी तो पियो।

1050. सरलता, समृद्धता की जननी है।

1051. दोगले व्यक्ति, कभी विश्वसनीय हो ही नहीं सकते।

1052. पर्याय का एकत्व, एक क्षण को भी शांति से नहीं रहने देता।

1053. अपने मंतव्य को शीघ्र बदलो, नहीं तो भवितव्य खराब हो जायेगा।

1054. विषय से विरक्त अर्थात् विषयों में स्वप्न में भी सुख न दिखना।

1055. ये बाह्य जीवन, दिन के स्वप्न से अधिक कुछ भी नहीं हैं।

1056. आत्मा के बाहर वैभव दिखना, जड़ बुद्धि है।

1057. विवेक, पाप से बचने का सबसे बड़ा साधन है।

1058. ये अंधानुकरण का नहीं, निर्णय पूर्वक अनुसरण का मार्ग है।

1059. बिना विचारे जो करोगे, उसमें पछतावा होगा ही ?

1060. दूसरे से छल अर्थात् तिर्यंचगति की ओर चल।

1061. जो कमी देखते हैं, वे कभी सुखी नहीं रह सकते हैं।

1062. पुरुषार्थ दुखी रहने में नहीं, हर परिस्थिति में सुखी रहने में है।

1063. नाम की भूख, कहीं आपका मुक्तिमार्ग का काम न बिगाड़ दे।

1064. जहाँ एक दोष होता है, वहाँ सर्व दोष होते ही होते हैं।

1065. आत्मा के ग्रहण में, विश्व का त्याग और अणुमात्र के ग्रहण में, आत्मा का त्याग।

1066. दु:ख मोह की पर्याय है, प्रतिकूलता की नहीं।

1067. आशा रूप आग को, धन (परिग्रह) ईंधन तुल्य हैं और अधिक आग भड़काते हैं।

1068. जो बुरी आदत छुटाएँ न छूटे, उसे व्यसन जानना।

1069. राग बढ़ाने में निमित्त बनना अर्थात् उसे वीतरागता से दूर करना है।

1070. विश्व का सबसे बड़ा पुरुषार्थ, अपनी मिथ्या मान्यता को बदलना है।

1072. जिन्हें बनना है भगवान, छोड़ देना चाहिए उन्हें सारे खोटे काम।

1073. अभिप्राय रहेगा खोटा तो सुख और समृद्धि का टोटा।

1074. जिनवाणी का अवतरण अर्थात् हमारे नये जीवन का अवतरण।

1075. जिनवाणी का आगमन अर्थात् हमारी मुक्ति का आगमन।

1076. जिनवाणी का उद्भव अर्थात् हमारे चारित्र का उद्भव।

1077. जिनवाणी का लिखना अर्थात् अणु-अणु की स्वतंत्रता की घोषणा।

1078. जिनवाणी अर्थात् जिनाज्ञा।

1079. जिनवाणी अर्थात् माता, जिसके निमित्त से हमारा मोक्षमार्ग में जन्म हुआ है।

1080. जिनवाणी का पदार्पण अर्थात् पवित्रता का पदार्पण।

1081. जिनवाणी की सुरक्षा अर्थात् अपने जीवन, रत्नत्रय और मोक्षमार्ग की सुरक्षा।

1082. जिनवाणी अर्थात् भवोदधि का किनारा।

1083. जिनवाणी अर्थात् चार अनुयोग का परिचय कराने वाली माता।

1084. जिनवाणी की अवहेलना अर्थात् जिनेन्द्र भगवान की अवहेलना जानना।

1085. ज्ञानी अज्ञानी पर्याय के भेद हैं, मेरे नहीं क्योंकि मैं तो ज्ञायक हूँ।

1086. ज्ञाता रहना पुरुषार्थ है और ज्ञाता न रहना नपुंसकता है।

1087. ज्ञानी का ऋण, ज्ञानी होकर ही चुकाया जा सकता है।

1088. जिनवाणी अर्थात् अनंत उपकारी माता, जो हमें कभी दुखी नहीं देखना चाहती।

1089. बंधन का वेदन ही बंधन है और मुक्ति का वेदन ही मुक्ति।

1090. मुर्दा कौन है, जिसे अपनी आत्मा का विश्वास नहीं।

1091. जिन्हें अगली पर्याय में नहीं छिलना हो तो वो पर्यायरूपी छिलके पर न रींझे।

1092. भोगों में सुखबुद्धि, अरे ये तो पापबुद्धि है।

1093. पाप के उदय से नहीं, पाप के परिणामों से डरो।

1094. यदि आपकी कोई नहीं मान रहा, मतलब समझ जाओ कि आप भी भगवान की नहीं मान रहे हैं।

1095. पर्याय दृष्टि अर्थात् महाप्रतिकूलता।

1096. अहंकार, किसी से जुड़ने नहीं देता।

1097. भगवान की भक्ति अर्थात् हर क्षण उन जैसा होने की भावना चलते रहना।

1098. आत्मा के बाहर रहना, ऐसा लगना चाहिए कि जैसे परदेश में रह रहे हैं।

1099. गृहस्थी का त्याग अर्थात् गृह और गृह संबंधी सुख सुविधा का त्याग।

1100. राग की आग से बचना हो तो भोगों को त्याग दीजिए।

1101. ज्ञायक से निकले ज्ञान को ज्ञायक को छोड़ कहीं ओर लगाना, अन्याय है।

1102. जिनको अंदर की प्रभुता भाती है, उनके जीवन में लघुता आती ही आती है।

1103. जो नियम नहीं पालते, वे अपने हाथों से अपनी मुक्ति टालते हैं।

1104. मजबूरी से नहीं खुशी से धर्म में लगिये। ये आपको अनंत खुशी देगा।

1105. जो लेने की नहीं देने की सोचता है, उसे सब कुछ मिलता है।

1106. भाग्य से संयोग मिलते हैं, धर्म तो पुरुषार्थ से मिलता है।

1107. शुद्धात्मा मिला तो वैभव मिला अन्यथा तो दरिद्रता ही है।

1108. जीव धन से नहीं, मन से धनी होता है, अतः कभी अपना मन छोटा नहीं करो।

1109. सचमुच सुविधा में दुविधा है, अतः दुविधा छोड़िये तो सब तरफ सुविधा ही सुविधा दिखेगी।

1110. दिखावे पर मत जाइये, आप तो आत्मा को देखने में ताकत लगाइये।

1111. पर्याय के सुधार का नाम धर्म है, किसी बाह्य क्षेत्र का नहीं।

1112. स्वयं की विस्मृति का नाम ही नशा है, जिसमें हर क्षण आकुलता रूपी सजा है।

1113. यदि पुण्य का होता भरोसा, तो कोई क्यों व्यापार-धंधे में इतना समय खोता ?

1114. जब सुख का निर्णय ही नहीं तो केसे सुख पाओगे, सावधान कहीं ठगा न जाओ।

1115. संक्लेश परिणाम, अपने ही आत्मघाती परिणाम हैं।

1116. विषयों में प्रेम, ये तो तीव्र कषाय संक्लेश परिणाम है।

1117. हँस रहे हो, पर ये तो सुख नहीं है। अरे ये तो रौद्रध्यान है, महादु:ख।

1118. टीवी से यदि ज्ञान बढ़ता है तो फिर अज्ञान किससे बढ़ता है।

1119. परिग्रह को जोड़ने वालों को भी अभी इतना ही निर्णय नहीं है कि ये प्रभुता का साधन है या पामरता का।

1120. जीवन का उद्देश्य वीतरागता बढ़ाना है और अज्ञान को मिटाना है।

1121. पद विरुद्ध कार्य करने का नाम ही तो अन्याय है।

1122. वस्तुस्वरूप के विपरीत करना तो दूर, सोचना भी अनीति है।

1123. विपरीत भावों का सेवन ही तो, अभक्ष्य भक्षण है।

1124. कार्य की सबसे प्रथम और सबसे बड़ी बाधा है, नेगेटिव सोच।

1125. आप किसी को सहयोग नहीं दे सकते तो विरोध तो मत करो।

1126. अच्छाइयाँ ग्रहण करने योग्य हैं और बुराइयाँ छोड़ने योग्य हैं।

1127. जिनवाणी की सुनी अनसुनी करने का परिणाम है कि जगत में कोई आपकी नहीं सुनता।

1128. अंतराय बनोगे तो अंतराय ही अंतराय मिलेंगे।

1129. ज्ञान पढ़ने से नहीं, विशुद्धि बढ़ने से होता है।

1130. क्षण-क्षण का कष्ट, उसका एक मात्र कारण स्वरूप से भ्रष्ट।

1131. मोही मोह की पूर्ति में लगा है और ज्ञानी मोह को पूरने में लगा है।

1132. देव-शास्त्र-गुरु के लक्ष्य से जो भी किया जाये, वो विशुद्ध भाव है।

1133. इस पर्याय में चिड़ोगे तो नियम से अगली पर्याय में भिड़ोगे।

1134. सेवा, भविष्य में मिलने वाला कलेवा है।

1135. कल की कल पर छोड़ो और एक-एक पल शुद्धात्मा से नाता जोड़ो।

1136. हम यहाँ मुक्तिमार्ग में आगे बढ़ने आये हैं, चतुर्गति में सड़ने नहीं।

1137. छोटे-छोटे कामों के लिए आत्महित जैसा बड़ा काम छोड़ना तो नासमझी है।

1138. ये उपसर्ग परिषह का मार्ग है, बाह्य सुविधा का नहीं।

1139. इस मार्ग में सुख की सुविधा तो है पर सुविधा का सुख नहीं।

1140. भोग अर्थात् रोग की वृद्धि, न कि सुख की समृद्धि।

1141. ज्ञानी अर्थात् वीतरागी और वीतरागी अर्थात् ज्ञानी।

1142. ज्ञानी और मानी, मानी और दानी, ये तो असंभव है ?

1143. कर्म हरने के लिए वीतरागता चाहिए और कर्म करने के लिए राग-द्वेष।

1144. पर को अच्छा-बुरा घोषित करने का अधिकार दिया किसने है आपको ? जो राग-द्वेष में लगे हो।

1145. बुरा न हो जाये इसका भय कुछ अच्छा करने ही नहीं देता।

1146. लाभ न उठाना ही तो हानि है।

1147. भाव मरण अर्थात् दुखी होना।

1148. बाहर की चिंता छोड़ो क्योंकि वो आपका नहीं, पुण्य का काम है।

1149. परिग्रह गौरव नहीं, गौरव को कम करने वाला कलंक है।

1150. निष्पृही हुए बिना, प्रभावना असंभव है।

1151. जीवों को मोक्षमार्ग में लगाना ही सचमुच दया है।

1152. ये दया के पात्र बनने का नहीं, पात्रों पर दया करने का मार्ग है।

1153. सचमुच राग-द्वेष का नाम क्रूर भाव है और वीतरागता का नाम दया।

1154. ये दया या दुआ का नहीं, शुद्धात्मा की ऊहापोह का मार्ग है।

1155. जो नहीं करते पात्रों पर दया, वे दया के पात्र बन जाते हैं।

1156. जिनके चित्त में चलता है भरम, वे कैसे हो सकते हैं नरम।

1157. सरलता, समृद्धिता की जनक है।

1158. निकटवर्ती हुए बिना, किसी से कुछ भी नहीं सीखा जा सकता ?

1159. परिणामों में दु:ख उत्पन्न न होने का नाम है, समृद्धता।

1160. बड़े व्यक्ति की सबसे बड़ी विशेषता है, उसकी लघुता।

1161. मुक्ति तो मिलेगी ही पर संसार की अनुकूलता भी चाहिए हो तो पंचप्रभु की शरण में जाओ।

1162. सब समस्याओं का एक समाधान - ज्ञान।

1163. धर्मी अर्थात् शुद्धात्मा के बिना, धर्म की कल्पना भी असंभव है ?

1164. जो धर्म से रीते हैं, वे मोह की मदिरा पीते हैं।

1165. धर्म आत्मा की आनंदमयी परिणति का नाम है, किसी बाह्य क्रियाकाण्ड का नहीं ।

1166. तादात्म्य हुए बिना, करने भोगने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

1167. पंच इन्द्रियों का भोग अर्थात् भ्रम का भोग।

1168. उपयोग का बाह्य ज्ञेयों में लगना भोग है और स्वरूप में लगना योग अर्थात् धर्म।

1169. धर्म अर्थात् जहाँ कर्म न बंधे।

1170. निर्बन्ध के मार्ग में संबंध बनाने की नहीं, निर्बन्ध होने की सोचो।

1171. इच्छा के अनुसार काम न हो और हम दुखी न हों, तब हम सच्चे मुमुक्षु कहलायें।

1172. अणु-अणु की स्वतंत्रता जानने के बाद भी इतनी व्यस्तता, आश्चर्य है।

1173. होते परिणमन के कर्ता हो या नहीं होते के, विचारना।

1174. दुनिया में सिर्फ पुण्य की चलती है, किसी और की नहीं।

1175. जिस कार्य के बाद पछताना पड़े, वो कार्य कभी नहीं करना।

1176. अज्ञानी भी जगत का नहीं, अपने भ्रम का ही करता है।

1177. यदि आप मात्र लौकिक जीवन जियेंगे, तो लोक में ही भ्रमेंगे।

1178. हमें कर्तृत्व नहीं, मैं करता हूँ, ये भ्रम तोड़ना है।

1179. जिनका विधाता अज्ञान है, उनको दिन-रात बस काम ही काम है।

1180. नाम की भूख, सारा आत्मार्थ खा जाती है।

1181. शुद्धता स्वभाव के आश्रय से आती है और अशुद्धता पराश्रय से।

1182. जो मात्र दूसरे के दोष देखते हैं, वो कभी किसी से कुछ सीख नहीं पाते ?

1183. सीखने को उम्र में बांधना, अपने विकास को रोकना है।

1184. लौकिक शिक्षा तो सिर्फ लोक में काम आयेगी, पर पारलौकिक शिक्षा तो लोक परलोक सब जगह काम आयेगी।

1185. नौकरी करने की नहीं, अब अनंत काल नौकरी न करना पड़े , इसकी सोचो ?

1186. यदि आप नहीं सोचोगे तो कैसे अपने आपको पाप से रोकेंगे ?

1187. यदि लोक में रमोगे तो लौकिक बनोगे और यदि लोक में नहीं रमोगे तो अलौकिक बनोगे।

1188. ऐसी समझ किस काम की, जो हमें वस्तुस्वरूप न समझने दे।

1189. बाँटने से कमी नहीं होती और लूटने से वृद्धि नहीं होती।

1190. होते को स्वीकारना सुख का और न स्वीकारना दु:ख का कारण है।

1191. अपेक्षा, उपेक्षा की जननी है।

1192. अपेक्षा पुण्योदय से होती है और उपेक्षा पापोदय से होती है।

1193. जिसकी अपेक्षा या उपेक्षा होती है, वो हम नहीं, हम तो उसके ज्ञाता हैं।

1194. जो ज्ञाता है, उसे हर परिस्थिति से निपटना आता है।

1195. परावलंबी व्यक्ति, कभी निरपेक्ष हो ही नहीं सकता ?

1196. जो सुख के लिए बाहर झांकता है, वो अपने अंदर बैठी शक्तियों को कभी नहीं आंकता है।

1197. यदि अन्तर्मुखता में सुख नहीं होता, तो सारे भगवान बाहर झांक रहे होते।

1198. प्रतिभाओं का सम्मान न करना, प्रतिभाओं को हतोत्साहित करना है।

1199. जिनवाणी माँ की न मानने वाले, उदंडी बालक तुल्य जीव हैं।

1200. अपने से योग्य व्यक्ति को आगे न बढ़ाना, अंतराय बनना है।

1201. पवित्रता लाने में जीवन लग जाता है और मिटाने में एक क्षण।

1202. वासना नहीं मिटाओगे, तो वो तुम्हें मिटाकर रख देगी ?

1203. ज्ञान में ज्ञेय नहीं, मात्र ज्ञेय का भ्रम है।

1204. वाह री अज्ञानता ! भ्रम के स्वाद को ही सुख का नाम दे दिया।

1205. ये सारा संसार परिणामों का फल है, किसी का अभिशाप नहीं।

1206. सफलता भव वृद्धि का नहीं, भव कटने का नाम है।

1207. मिथ्यात्व शत्रु है, उसे जितनी जल्दी हो सके मिटा दो, अन्यथा वो सब कुछ मिटा देगा।

1208. वात्सल्य बाँटने की चीज है, इसे खूब बांटो।

1209. पाप करना आसान है, पर फल भोगना कठिन ?

1210. सुख का संबंध सामग्री से नहीं, परिणामों से है।

1211. जिस परिणति में विषयों का वास हो, उसे कहते हैं वासना।

1212. सुख आत्मा की पर्याय है, किसी की कोई कल्पना नहीं।

1213. अन्य-अन्य वस्तुओं से आय अर्थात् लाभ (सुख) की कल्पना ही तो अन्याय है।

1214. जीव परद्रव्य को नहीं, उसके लक्ष्य से मात्र अपने परिणामों को भोगता है।

1215. जो स्वयं को वस्तुस्वरूप समझा दें, उसे कहते हैं सच्ची समझ।

1216. ये समझौते का नहीं, समझ का मार्ग है।

1217. मन मनन करने को मिला है, मलिन करने का नहीं ?

1218. मोह-राग-द्वेष मल हैं और वीतरागता निर्मलता।

1219. इन्द्रियों के द्वारा सुख लाना मूर्खता है, सुख तो इनसे लक्ष्य हटाकर स्वभाव सन्मुख होने से आता है।

1220. स्वभाव का आदर करो, वरना दर-दर की ठोकरे खानी पड़ेगी।

1221. आत्महित में लगना और लगान, ये है सच्ची दया।

1222. अपने को आत्मद्रव्य न मानकर पर्यायरूप मानना, अनंत अपराध है।

1223. प्रतिकूलता विराधना का फल है, अतः प्रतिकूलता से बचना हो तो विराधना से बचो।

1224. बच्चों को कुछ दो चाहे न दो, पर संस्कार देना तो अनिवार्य है।

1225. संस्कार पापों से इंकार और धर्म का सत्कार कराता है।

1226. गलत बात पर न टोकना, गलत बात को बढ़ावा देना है।

1227. ज्ञान से अच्छा सुख का कोई और दूसरा साधन नहीं।

1228. ज्ञाता-दृष्टा रहना ही साधना करना है।

1229. साधनों की राह देखने वाले, साधना करना जानते ही नहीं।

1230. जो स्वभाव को जानते हैं, वे विभाव की कभी नहीं मानते हैं।

1231. निर्दोष ज्ञायक को दोष लगाना ये तो अवर्णवाद है।

1232. व्यसनी, निर्विचारी होता है।

1233. विपरीत मानने से भी वस्तु का स्वरूप नहीं बदलता है, इसलिए जीव सदा भगवान ही है।

1234. द्रव्य दृष्टि की दुनियाँ में गति होती ही नहीं है।

1235. आत्मा यदि भगवान न होता तो पर्याय में ये भगवानपना कहाँ से प्रगटता।

1236. स्वभाव की दृष्टि तो मुक्ति पक्की और पर्याय की दृष्टि तो मुक्ति से कट्टी।

1237. दशा नहीं, पहले दिशा बदलो।

1238. ज्ञाता-दृष्टा न रहना ही प्रतिकूलता में रहना है।

1239. पाप - जो स्वरूप से पतित करे।

1240. कर्मदण्ड की व्यवस्था होने से सदा सावधान रहो।

1241. निर्विचारिता के फल में असैनी पर्याय मिलती है।

1242. बुद्धि होना अलग बात है और उस बुद्धि का मोक्षमार्ग में लगना अलग बात।

1243. जो पूर्वापर विचार नहीं करते, वे विचारे बन जाते हैं।

1244. ये होशियारी बताने का नहीं, समझदारी से दु:ख मिटाने का मार्ग है।

1245. अपने को सम्बन्धविहीन देखना, निर्बन्ध होने का एक मात्र उपाय है।

1246. मायाचार - एक क्षण भी शांति से बैठने नहीं देता।

1247. इच्छा दूर करने का उपाय शिक्षा है, न कि विषयों की भिक्षा।

1248. दोष ढूँढ़ना दोष है और गुण ढूँढ़ना गुण।

1249. अज्ञानी की दृष्टि के अलावा, विश्व में कहीं भी और कुछ भी दोष नहीं।

1250. पर्याय को अपनी न मानना, पर्याय के सारे दोष दूर करने का एक मात्र उपाय है।

1251. पूरा मोक्षमार्ग निर्णय और प्रतीति से चलता है।

1252. जीव अपने निर्णय प्रतीति का ही वेदन करता है।

1253. जिनवाणी की एक भी पंक्ति बिना निर्णय किये मत छोड़ो।

1254. मोक्षमार्ग का एक मात्र पुरुषार्थ, तत्त्व निर्णय है तत्त्व निर्णय।

1255. भ्रम दूर करने का एक मात्र उपाय, तत्त्व निर्णय है।

1256. विपरीत निर्णय से भ्रम पुष्ट होता है।

1257. आत्मा के बाहर सुख नहीं, सुख का भ्रम है।

1258. भ्रम तोड़े बिना, धर्म की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

1259. ज्ञान में बारम्बार अभ्यास करने से मोह गलता है और रत्नत्रय फलता है।

1260. किसी भी चीज को सुलभ करने का उपाय, अभ्यास है।

नोट - अगर इस पुस्तक का आपने स्वाध्याय कर लिया हो या आपके पास पहले से यह पुस्तक हो तो कृपया इसको आगे किसी स्वाध्यायार्थी भाई/बहिन को विनय पूर्वक दे दें। ताकि वह भी स्वाध्याय कर सकें।